स्वतन्त्र विचारधारा

इस समय जमाना गुजर रहा है, बड़े नाजूक दौर से।
सुख समृद्धि के लिए पढ़ना स्वतन्त्र विचारधारा गौर से।।

स्वतन्त्र जैन जालन्धर
9855285970

स्वतन्त्र विचारधारा

जग में अंधियाला छाया था,
मैं ज्वाला लेकर आया था,
मैं जलती का तम हर न सका,
मै जीवन में कुछ कर न सका ।

हरिवंश राय बच्चन

अर्चना कैसी हो ?

जो मैत्री भाव बढ़ाए वह है ज्ञान। जो मैत्री भाव को न्यून एवं संकुचित करे वह अज्ञान है। हम स्वयं इस तराजु पर आंकलन कर सकते हैं कि हम ज्ञानी है या अज्ञानी । किसी का मत सुनना, अपना सुनाना हमारे अपने हाथ में है। दूसरों का निर्णय करना हमारे लिए कदाचित सही नहीं होगा। हमारी चेतना का निर्णय सही होगा यह फरमाते हैं महानुभाव और तीर्थंकर भगवान।

भगवान महावीर कहते हैं स्तुति का फल है आत्म-बोध। स्तुति करते हुए हम आत्म-स्वरूप को परचित होते हैं। स्तुत्य से हम स्वयं को तोलते हैं, स्तुत्य के प्रति रही हुई हमारी आस्था स्तुति के भीतर के सद्भाव-सदगुण हमारे अंदर अनावृत कर देगी। स्तुत्य की वीतरागता हमारे अन्दर वीतरागता को वर्धमान बना देगी, स्तुत्य का श्रेय साधना हमारी साधना में सुगन्ध भर देगी। स्तुति का मैत्री स्वरूप हमें मैत्री स्वरूप बना देगी।

जब हम किसी अराध्य देव एवं तीर्थंकर की स्तुति (अराधना) करते हैं तो उस अराधना का भाव कि अराध्य देव के सद्गुण हमारे अन्दर स्थपित हो। चिन्मय की स्तुति महत्वपूर्ण और अर्थपूर्ण है। स्तुति प्रार्थना या याचना नहीं है। कुछ पाने के लिए या अर्जित करने के लिए हमें स्तुति नहीं करनी चाहिए। किसी लाभ अथवा कुछ पाने के लिए स्तुति करेगें तो वह स्तुति नहीं होगी, वह केवल प्रार्थना एवं याचना ही होगी। याचना करने वाला भिखारी हो सकता है भक्त नहीं। याचना भीतर की आकांक्षा और वासना से प्रकट होती है, वासना लिप्त प्राणी स्तोता नहीं हो सकता। स्तोता (अर्चना) तो श्रद्धा से प्रकट होती है जो हमारा समग समर्पण का भाव ही स्तुति की गरिमा है।

अर्चना-राजेश जैन, लुधियाना
5.2.2021 9501035989

ब्रह्मा, विष्णु, महेष, शिव शंकर हरि राम,
चौबीस जिनेश को , कोटि, कोटि प्रणाम ।।

स्वतन्त्र जैन

लेखन कार्य आरम्भ करने से पूर्व चौबीस तीर्थंकर भगवान को वन्दना एवं विश्व के समस्त देवी-देवताओं को मेरा नमस्कार ।।

धार्मिक विचारधारा

धम्मों मंगल मुकिट्ठं, अहिंसा, संजमो, तवो ।
देवा वितंनमसंति, जस्स धम्में सयमणो ।।

...दशवैकालिक अ-1.1

वेद, पुराण, श्रुति-स्मृति, उपनिषद्, गीता एवं भगवद् गीता और जैन आगम

वेद का शाब्दिक अर्थ है ज्ञान, भारत में ज्ञान करोड़ों – अरबों वर्ष पुराना ज्ञान की पद्धति श्रुत (Verbal) ज्ञान था। चाहे उसे श्रमण या वैष्णव संस्कृति मानें। वेद को ऋषि व्यास ने लिपीबद्ध किया।

वेद लिखे जाने से बहुत पहले जैन धर्म था।

.....भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ राधा कृष्णन ।

वेद प्राचीन भारत के पवित्र साहित्य हैं जो वैष्णवों के प्रचीनतम और आधारभूत धर्मग्रन्थ भी हैं। वेद विश्व के सब से प्राचीन साहित्य भी माना गया है । भारतीय संस्कृति में वेद सनातन वर्णाश्रम धर्म के मूल और सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं। वेद शब्द संस्कृत भाषा के विद् जाने धातु से बना है, वेद का शाब्दिक अर्थ है ज्ञान। वेद चार हैं- चारों वेदों मे ऋषभ देव की स्तुति की गई है, जिससे सिद्ध होता है कि ऋषभ ही आर्य और सनातन हैं।

ऋग्वेद का आयुर्वेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गंधर्ववेद और अथर्ववेद का स्थापत्यवेद से क्रमशः चारों वेदों के उपवेद बतलाए गये हैं। वेद के विभाग चार ही हैं।

ऋग्वेद , यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद । व्यास जी ने वेद लिखे हैं. परन्तु वेदव्यास जी ने लिपीबद्ध किये है, अर्थात् वेद तो अनादि है वेदव्यास जी के जन्म से भी पूर्व हैं। उपनिषद- इनमे परमेश्वर, परमात्मा-ब्रह्मा तथा आत्मा के स्वभाव और संबंध का दार्शनिक तथा ज्ञानपूर्वक वर्णन किया गया है। ब्रह्मा जी तथा जगत् का ज्ञान प्राप्त करना ही उपनिषद् हैं, यह समस्त भारतीय दर्शनों के मूल स्त्रोत हैं चाहे तो वेदांत हो या फिर सांख्य या जैन , बोद्ध धर्म ग्रन्थ।

पुराण- प्रचीन कथाएं ही पुराण कहलाती हैं।

गीता- धर्मोपदेश ही गीता है।यह महाभारत का एक अंश है। भगवद् गीता भगवान श्री कृष्ण के मुखारबिन्द के प्रवचन ही भगव्द गीता कहलाते हैं।

श्रुति- श्रुत ज्ञान को लिपीबद्ध करने से श्रुतियाँ कहलाई।

उपनिषद- ऋषि ब्यास जी ने चारों वेद लिखवा दिये, तब भी बहुत सा ज्ञान रह गया, जिसे अठारह भागों मे लिखा गया और अठारह उपनिषद कहलाए।

उपनिषद को ऋषियों का संवाद भी कहा जाता है, एवं गुरु के पास रहकर ज्ञान अर्जित करना भी माना जाता है।

यज्ञ- यज्ञ का अर्थ होता है तपाना एवं तपस्या। वैष्णव संस्कृति में प्राचीन ऋषि-मुनि जंगलों में पहाड़ों की गुफाओं में लम्बे समय तक बिना अन्न-जल अपने शरीर को तपाते थे जिससे आत्मा निर्मल हो जाती थी। वातावरण शुद्ध हो जाता था, फिर वह धर्म-उपदेश देते थे। कुछ विद्वान ऋषियों ने इस का विकल्प अग्नि जला कर तपाना इस में कुछ द्रव्यों की आहूती देकर वातावरण शुद्ध करना का प्रचलन किया, जिसमें सुगन्धित चन्दनादि एवं अज (अनाज जो तीन वर्ष पुराना जिस में उत्पति की क्षमता न हो) का प्रयोग होता था। अज का एक अर्थ होता है बकरा, तो कई पंडितो ने बकरे की बली यज्ञ में विधान बना लिया। एक बार यह प्रश्न नारद जी से किया गया, नारद जी ने स्पष्ट किया कि धर्म के काम में बकरे

का क्या काम, यहां अज-अनाज ही है। फिर यज्ञों में जजमानों से सोना आदि का दान एवं भोजादि की व्यवस्था, जो आम आदमी की हैसीयत से दूर होता चला गया और पशु-बली का प्रचलन भी बढ़ गया।

यज्ञ का अर्थ होता है तपाना एवं तपस्या। वैष्णव संस्कृति में प्राचीन ऋषि-मुनि जंगलों में पहाड़ों की गुफाओं में लम्बे समय तक बिना अन्न-जल अपने शरीर को तपाते थे जिससे आत्मा निर्मल हो जाती थी। वातावरण शुद्ध हो जाता था, फिर वह धर्म-उपदेश देते थे। कुछ विद्वान ऋषियों ने इस का विकल्पिक वैद्यशाला या यूँ कहूँ कि रोग परीक्षकशाला स्थापित की । इसमें सब कोई वैद्य है, कोई वैद्य पुत्र, कोई ज्ञापक है, कोई ज्ञापक पुत्र, कोई, चिकित्सक पुत्र है।' प्रत्येक के आने पर दृष्टि निक्षेप करते हुए जीवक ने कहा।

अगर रोग घातक व मरणान्तक हो तो रोगियों को अलग-अलग विभागों में भेजा जाता है, जहाँ उनकी चिकित्सा सुगम व सुलभ हो।

अगर कोई जानलेवा एवं प्राणन्तक न हो तो क्या उपचार करते हो ?

जीवक ने दूसरे कक्ष की ओर संकेत करते हुए कहा-' वहाँ अभ्यंगन, उद्वर्तन, स्नेहन, संवेदन, अवदहन, वमन, विरेचन, अनुवासन, निरुह, वस्ती कर्म, उत्तर वस्ती, तीक्ष्ण कर्म, प्रतक्षणा कर्म, शिरोवस्ती तर्पण, गुटिका, औषध एवं भेषज आदि से स्वास्थ लाभ दिया जाता है।

एक ही श्वास में जीवक ने सारे उपचार गिना दिये। आगे चलने वाली बातों से द्वितीय कक्ष को छोड़ तृतीय कक्ष के प्रवेश द्वार पर गए और जैसे ही कक्ष का द्वार खोला, तभी मुँह से एक भयंकर व वीभत्सव चीत्कार निकली, जिससे धन्वन्तरि व जीवक सहित सभी के कदम उस दिशा की तरफ दौड़े जहाँ से अवाज आई थी । राजा ने दोनों चक्षुओं को बन्द कर हथेली से ढाँप रखा था।'महादेवी को क्या कष्ट हुआ ?' धन्वन्तरि वैद्याचार्य ने पूछा-'अगर किसी सर्प

ने दंश मारा है तो मैं क्षणों में विष निकालकर आपकी देह निर्विष कर दूँगा।' कहने के साथ ही पोटली से एक शुक्ति निकाल ली।

'सामने की तरफ संकेत किया तर्जनी अंगुली से.....मुँह से कुछ नहीं बोली। अब भी देह शीत लहरों में काँपती है वैसे काँप रही थी व मस्तक पर स्वेद राशि प्रकट होकर रानी चेलना के रुप को द्विगुणित कर रही थी मानों मस्तक पर मोतियों की माला बाँध रखी हो।'

इंगित की हुई दिशा में छहों चक्षुओं ने देखा कि गजदंतियों पर दो अस्थि पिंजर झूल रहे थे। कक्ष खोलते समय हवा का तेज झोंका लगा था। उसी से वे अस्थि पिंजर हवा में तैरने लगे।

उस कक्ष में कुम्भाकार शत-सहस्र पारदर्शी काँचकूपक थे, जिनमें कुछ काँचकूपकों में सर्प की, कुछ में मेंढक, कुछ में मकड़ी व कुछ में बिच्छू की जातियाँ, उपजातियाँ व प्रजातियाँ थीं। वहीं भोजपत्र पर उस जीव की सारी सूचना अंकित थी, जो कि जीवित थे एवं बड़े ही विकराल नजर आ रहे थे। उन्हीं काँचकूपकों के दायीं तरफ भिन्न-भिन्न वर्ण व जाति के कृमि भी थे। अर्धशत काँकूपकों पर कालहूट शब्द उत्टंकित था।

'अन्नदात्री ! ये अगद तन्त्र की प्रयोगशाला है। यहाँ तरह-तरह के विषों का निर्माण व विष के उपचार पर कार्य किया जाता है। ये जो दो अस्थि पिंजर आप देख रहीं हैं, इन पर रसायन का कार्य किया गया है। मात्र चार याम में इनका चर्म गलकर हवा में विलीन हो गया।'

अपने शोधकार्यों से राजा को अवगत करवाते हुए कह रहा था, 'राजन् ! हमारा शोध ऐसे रसायन पर चल रहा है जिसके सम्पर्क में आने से अस्थिसहित वातावरण में हिम खण्ड के समान घुल जाए, नष्ट हो जाए।'

बड़े ही ध्यान से देखने पर उस प्रयोगशाला में कार्य करते हुए चार-पाँच महावैज्ञानिक भी नजर आ रहे थे।

राजा श्रेणिक व चेलना ने विस्मय भरे नेत्रों से उन काँचकूपकों एवं महावैज्ञानिकों को निहार रहे थे।

'आपकी नूतन खोज कौन सी है ?' राजा श्रेणिक ने अत्यन्त मधुर भाव से पूछा।

एक काँच चपक को हस्तागत कर गम्भीर वाणी से जीवक ने कहा- 'राजन ! इस अगद का एक अणु अगर किसी विशालकाय जन्तु के शरीर में प्रवेश कर गया तो अगले ही पल वह मृत्युशय्या पर लेट जाएगा।'

'इतनी मारक क्षमता वाला विष ? असम्भव !' कुछ सहज होकर पट्टमहिषी चेलना भी वाग्युद्ध हेतु तैयार हो गई।'कुंजर....कुंजर नहीं मर सकता इसके एक अणु से।'

जीवक का संकेत पाकर थोड़ी ही दूर उसी कक्ष के पृष्ट भाग में बंधे हस्ती समूह से एक गज की सूंड थामे एक गोर बटू ने कक्ष में प्रवेश किया।

एक शलाका को उस चषक में रखे विष से छुआ कर उस कुंजर के उदर भाग पर लगाकर जीवक चार डग पीछे हट गया और अगले ही पल वह कुंजर चिंघाड़ता हुआ भूमि पर ऐसे धराशायी हो गया जैसे वात से ताड़ित होकर रेत का महल भूमिसीत हो जाता है।

ये दृष्य देखकर सभी आश्चर्य चकित हो गए। इतनी मारक क्षमता वाला विष, इसकी तो एक बूँद ही किसी भी सरोवर को जहरीला बना देगी एव विश्व के विनाश के लिए इतनी ही.....।

राजा के मन में तो ये चिंतन चल रहा था . पर उस समय रानी तो काष्ठ पुतलिकावत् हो गई। मन में गहरा पश्चाताप.... मैंने यह क्या करवा दिया..... जीव हिंसा..... भयंकर पाप.....पंचेन्द्रिय वध..... मानो मन ऐसा ही कह रहा

था कि दोनों कानों को खींचकर अपने कपोलों को तब तक पीटे जब तक ये रक्त का वमन न करने लगें या उद्वभ्रान्त चित्त वाली होकर दीवार में अपना सिर दे मारे.....।

'घबराओ मत राजन् ! अब दूसरा चमत्कार देखो।' जीवक ने द्वितीय चषक में शलाका लगाकर उस हस्ती के उसी उदर प्रदेश पर घुमाया। वह हस्ती ऐसे अँगड़ाई लेकर खड़ा हो गया जैसे निद्रा से उठा हो।

प्रचीन युग के ज्ञान से आधुनिक विज्ञान अभी बहुत पीछे है। युद्ध क्षेत्र में घायल रात के उपचार से फिर मैदान में पहुँच जाते थे। यह है मेरे प्रचीन भारतवर्ष का इतिहास जो उपचार में ऋषि मन्त्र और तन्त्र विद्या का प्रयोग करते थे । यह आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व महाराज बिंबसार (श्रेणिक) के समय जीवक वैद्य महाराज बिंबसार का दासीपुत्र भाई था और धनवन्तरी उस समय का महान चिकित्सक था।

वर्तमान भारतीय चिकित्सा में भी कोई कमी नहीं, अब यन्त्र विद्या का उपयोग अधिक लाभकारी है,जैसे पेसमेकर, ऐंजयोप्लास्ट, ईको,डायलसिस आदि। दुःख की बात है कि वर्तमान में कुछ षडयन्त्रों के उपयोग से रोगी दुःखी हो रहे हैं, चीन ने कोविड-19 के नाम पर समस्त विश्व को अपने षडयन्त्र में उलझाया। भारतीय चिकित्सा विश्व से अच्छी और सस्ती है परन्तु भारत में मध्यम वर्ग की औसत आमधन बहुत कम है।

Bhagvad Gita's 18 lessons

1 Wrong Thinking is the only problem in life.

गल्त विचारधारा ही दुःख का कारण है।

2 Right knowledge is the ultimate solution to all our problems.

शुद्ध ज्ञान ही हमारी समस्याओं का समाधान है.

3 Selfness is the only way to prosperous & progress.
अहंकार का त्याग ही केवल खुशहाली और उन्नति का रास्ता है।

4 Every Act can be an act of Prayer.
हमारा प्रत्येक कार्य ही प्रभु भक्ति होनी चाहिए।

5 Renounce the Ego of individuality & Rejoice in the Bliss of infinity.
अपना अंहकार त्यागना ही परमात्मा का आशीर्वाद है।

6 Connect to the Higher consciousness daily.
प्रतिदिन परमात्मा के साथ रहो।

7 Live what you learn.
जीवन व्यतीत करो जैसे तुम चाहो।

8 Never give up on yourself.
अपना विश्वास मत छोड़ो।

9 Value your blessings.
परमात्मा की कृपा पर भरोसा रखो।

10 See Divinity all around.
परमात्मा को सर्वव्यापी देखो।

11 Have enough surrender to see the truth.
सच्चाई को समझो.

12 Absorb your heart into supreme Divinity
कृत अपने हृदय में परमात्मा को स्थान दो।

13 Detach to maya & attach to divinity.

संसार के मोह-माया को त्यागकर परमात्मा से संबंध करो।

14 Leave a life style to your vision.

15 Give priority to your divinity.
परमात्मा को प्राथमिकता।

16 Being good is a reward in itself.
विश्वास ही भरोसा।

17 Choosing the right our the pleasant is a sign of power.
सही मार्गदर्शक ही खुशहाली का रास्ता है।

18 Let's go to the Union of God's.
आओ परमात्मा का ध्यान करें।

जैन आगम- भारतवर्ष प्राकृति की विशिष्ट विभूतियों का अक्षय भण्डार माना जाता है । प्रकृति अपना पूरा पिटारा खोलकर पृथ्वी का श्रृंगार करती है। विश्व में अनेकों सांस्कृतिक धाराओं में से भारत की दो धाराएं ही प्रचीन मानी जाती हैं, जैन और वैदिक संस्कृति। इसमें से जैन संस्कृति को ही प्रचीन माना गया है। भारत में जैन ही यहां के मूल निवासी है, क्योंकि आर्य (श्रेष्ठ) भारत के निवासी थे जो उस समय में जो भारत द्राविड़ लोग रहते थे, उन का मूल धर्म जैन ही था। ज्ञान (वेद) जगत में जैन धर्म अवतारों (तीर्थंकरों) ने न केवल पृथ्वी अपितु पूर्ण ब्रह्मांड का ज्ञान हमें दिया। जैन दर्शन श्रुत ज्ञान था जो अरिहन्तो द्वारा अपने गणधरों को दिया गया। उस समय स्मरण शक्ति बहुत बलवान होती थी, जो सुन लिया वही आगे अपने शिष्यों को सुना दिया, जैनसंस्कृति का इतिहास क्रिया एवं चारित्र की परतों मे दब कर रह गया. सर्वज्ञों, गणधरों एवं चतुदर्शपूर्वी सन्तों का ज्ञान शाब्दिक रूप मे समय पर नहीं हुआ, वाचनिक वाचनाएं चलती रहीं। वैदिक लेखकों ने भोजपत्र, पीपल के पत्तों पर पालपोटन की स्याही से लिख लिख कर साहित्य को अमर कर दिया। ज्यों ज्यों श्रुत शक्ति कमजोर होने लगी,

हमारे पूर्वज आचार्यों ने महावीर निर्वाण के 980 वर्ष पश्चात इसे लिपी बद्ध किया। एक समय में भीषण आकाल के कारण बहुत सा ज्ञान ज्ञानियों के साथ ही समाप्त हो गया, फिर 113 मुनिजनों ने इकट्ठे होकर इसकी वाचना का भिन्न-भिन् स्थानों पर भरसक प्रयास किया, जिसे वल्लभी वाचना, मथुरा वाचना एवं पाटलीपुत्र वाचनाओं द्वारा लिपीबद्ध किया। जिससे हमारा इतिहास परम्परागत समृद्ध होते हुए भी विश्व साहित्य में कंगाल है। आरम्भ में यह ज्ञान चौदह पूर्व का ज्ञान कहा जाता था जो आचार्य भद्रबाहू स्वामी तक ही रहा भीषण अकाल के कारण आचार्य श्री भद्रबाहू स्वामी नेपाल पधार गये और तप में लीन हो गये। बहुत से ज्ञानी सन्त इस अकाल में देह-त्याग कर गये। आकाल समय समाप्ती पर श्रीसंघ ने श्री भद्रबाहू स्वामी जी से विनती की आप भारत पधारे, जिससे नव मुनियों में ज्ञान बांटा जाए, जो उन्हों ने अस्वीकार कर दिया, संघ की विशेष विनती पर उन्हों ने कहा, जिसने ज्ञान लेना वह यहां आकर प्राप्त कर सकता है, जिससे 500 मुनिराज नेपाल पधारे परन्तु केवल स्थूलिभद्र जी ही दस पूर्व का ज्ञान अर्जित कर सके, शेष वापिस भारत आ गये। श्री स्थूलिभद्र जी महाराज के साथ उनकी दो बहनें जो साध्वी थी भी नेपाल गयी थीं। एक समय वे श्री भद्रबाहू जी के दर्शनों के लिए पधारी और श्री स्थूली भद्र जी के दर्शनों की याचना की, श्री भद्रबाहू जी ने कहा वह अमूक स्थान पर तप कर रहा है, आप वहां जाकर दर्शन लाभ ले सकती हैं। वे उस स्थान पर चली गई, श्री स्थूलीभद्र जी को दिव्य ज्ञान से पता चल गया और उस ज्ञान का उपयोग कर सिंह का रूप बनाकर बैठ गये, जब उन साध्वियों ने सिंह को देखा तो समझ गई कि यह सिंह स्थूलीभद्र को निगल गया होगा, वापिस श्री भद्रबाहू स्वामी के पास आ कर वृत्तान्त सुनाया, तो उन्हों ने कहा वह सिंह ही स्थूलीभद्र था। जब स्थूलीभद्र जी आगे ज्ञान अर्जित करने आए, तो भद्रबाहू स्वामी ने कहा- अब तुम आगे ग्रहण करने के पात्र नहीं रहे। जिससे वह ज्ञान भी कम होता गया जो आज 32 आगमों के रूप में उपलब्ध है। श्री भद्रबाहू स्वामी ने बताया कि आगे के चार पूर्वों में वह ज्ञान है जिसे आने वाले समय में इसे-राग-द्वेष का अस्त्र बना लें। आचार्य

अभयदेव सूरी जी के हम ऋणी जिन्होंने श्रुत ज्ञान की कुञ्जी हमें दी है, आचार्य शीलांक, आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य हरिभद्र सूरि और आचार्य हेमचन्द्र जी को हम नमन करते हैं जिनके अनथक प्रयास से हमारा कुछ इतिहास जीवित है। सर्वप्रथम मन्त्र विद्या थी, फिर तन्त्र विद्या जैसे भगवान अरिष्टनेमी (श्री कृष्ण के चचेरे भाई) जब गृहस्थ में थे तो वे जरासंध के साथ युद्ध में थे, परन्तु अथियार नहीं उठाया। जब जरासंध यादवों का घोर विनाश कर रहा था, तब अरिष्टनेमि ने अपने पंचजन्य की ध्वनि की, जिससे जरासंध की सेना में भगदड़ मच गई और आधी सेना मृत्युलोक पधार गई। उसके पश्चात यन्त्र विद्या, भारतीय संस्कृति मानव संस्कृति का आदि-स्त्रोत है, भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हमारे पूर्वज अत्याधिक सम्मानीय थे, यह हमारे शास्त्र और धार्मिक ग्रन्थ प्रमाणित करते हैं कि अमोघ शक्तियाँ, अमोघ बाण, आग्नेयास्त्र, वायव्स्त्र, ब्रह्मास्त्र, रौद्रास्त्र, वैश्णवस्त्र, वरुणास्त्र,रथमूस्लास्त्र (अदुनिक टैंकों से भी अत्याधिक संहारक स्वचलित भीषण अस्त्र), महाशिलकण्टक, शतघ्नी आदि संहारक अस्त्रों का निर्माण और उनका प्रयोग हमारे पूर्वज जानते थे। जिसका निषेध कर दिया गया। अब षडयन्त्र युग चल रहा है, दुःखद बात है कि हम सिद्धांतों मे समृद्ध पर आचरण में नागण्य, जब श्रद्धा की बात आती है तो मोक्ष सिद्ध शिला पर नजर होती है परन्तु वास्तविकता हमारे सिद्धांतो का अपहरण कर लेती है और महापुरुषों के किये काम धरातल में चले जाते हैं।

****

अहिंसा कायरता नहीं, अहिंसा सत्य का मार्ग है ।

अहिंसा कायरता नहीं जो भगवान महावीर ने हमको रास्ता दिखाया, चाहे दुनिया इसको कायरता माने वह हंकार के नशे में यह कह देते हैं। इसी रास्ते को अपना कर महात्मा गांधी ने विदेशियों से भारत मुक्त करवाया । हिंसा पाप है इसको अन्य मताविलम्बी भी मानते हैं, निस्संदेह आज सारा संसार ही

पापों की ओर झुक रहा है। विश्व के सभी प्रमुख देश विनाशलीला रचने की होड़ में घातक परमाणु अस्त्रों के संग्रह में लगे हुए हैं। हमारा पड़ोसी देश जो इस्लाम का मानने वाला है, वह जिहाद के नाम पर इस्लाम पर ही जुल्म ढ़हा रहा है, इसका फल भी कड़वा ही मिलेगा, कोई भी जाति व मत इसको मीठा नहीं बना सकती । सभी धर्माचार्यों ने इस को मुख्य पाप बताया है। यदि मुसलमान विद्वानों के आचारों और विचारों पर ध्यान दिया जाए तो मालूम होता है कि वह दया के पवित्र गुणों से पृथक नहीं। यदि कोई निष्ठुर अपने अंहकार के मद में विनाशलीला रचे तो वह अपने दयावान पूर्वजों के सत्कर्मों के विपरीत अपना सवार्थ सिद्ध करने में लगा है। इस्लाम में यह रीति है कि अपने छोटे बच्चे को ही **बिस्मिल अल रहमान उल रहीम** का कल्मा सिखाते हैं। जिस का मतलब है कि वह अल्लातालाह के गुणों से अपरिचित न रहे, अल्लाह के नाम से जो रहमान और रहीम हैं, पापीयों को क्षमा और दया करने वाले हैं। अन्यायी और निष्ठुर इन्सानों के निर्मूल विचारों से इस्लाम धर्म दृष्टि हीन समझा जाता है।

एक बार हज़रत अयूब जिन के शरीर में कीड़े पड़ गये, उन्हों ने अल्लाह के उन सर्वोत्कृष्ट गुणों का जिन का वर्णन कल्में में किया गया है-ऐसे कष्ट के समय भी नहीं छोड़ा, जो कीड़ा नीचे गिर जाता था, वह सावधानी से उठा कर अपने घाव पर छोड़ देते थे, इस विचार से की कीड़े को खुराक न मिलने से कहीं मर न जावे, जब उन से पूछा गया कि ऐसा क्यों ?- तो उत्तर दिया- अल्लाह (अल्लातालह) ने इनकी खुराक मेरा शरीर ही बनाया है, क्या मैं इन्हें जिलावतन (निर्वासित) करूँ ? वह अपने आप स्वस्थ हो गये ।.....(रोजता उला सफ़िया)

एक मुस्लिम शायर ने लिखा है-

कबरऐ होशमन्द, किहों दफन जिस्में चारिन्दों पारिन्द।
लातजालो बतुने कुम कबूरउल हैवानात्

तुम अपने पेटों को हेवानों की कबरे मत बनाओ। न तू गोस्त खा न शराब पी।

यके सीरत नेकमरदां शनो, अगरने मरदी वा पकीजाह् रूके शिबली जहानूत
हे मनुष्य यदि तू भला आदमी और शुद्धात्मा है तो तू भले पुरुष के गुणों को सुन।

बाबा फरीद साहिब कई वर्षों की वन में तपस्या कर घर लौटे तो माता ने पूछा- बेटा तू वन में क्या खाता था ? तब फरीद ने उत्तर दिया जब बहुत भूख लगती थी तो पत्ते तोड़ कर खा लेता था। तब माता ने उस के सिर का एक बाल नोचा तो मूँह से हाय निकला। माता झिझक कर बोली- जिन वृक्षों के पत्ते तोड़ कर खाता था, क्या वह वृक्ष दुःख पा कर नहीं रोये होंगे ? तब बाबा फरीद फिर जंगल में लौट गया और सूखे गिरे हुए पत्ते ही खाने लगा। सब्जी में भी जीव माना है।

किसी फारसी के कवि ने लिखा है-

इफ्तदो हफ्ताद कालब अरदह अम, बारहा दरसवजा रूहीदहा अम ।।

यह 84 लाख योनियों में कालब (देहधारी) जन्म किये, कई बार सब्जी में मेरी रूह पैदा हुई।

शेख सादी फरमाते हैं-

जेरे पायल ग़र बिदानी हाले मोर, हम चूँ हाले तुस्त ज़ेरे पाप फील।

एक चींटी को अपने पैर के नीचे आने को ऐसा जान, जैसे तूँ हाथी के पांव नीचे आ गया है। हाथी के पांव तले आने से जो तेरी दशा होगी वही चींटी की तेरे पांव तले होगी।

फरदौसी साहिब फरमाते हैं-

चःषुश गुफ्त फारदौसी पाक जाद, कि रहमत बरां तर बुत पाक बाद।
जाँ मयाजरूह हरचाः रूबाही कुन, कि दरशारीयत भागीर जीन गुनाहे नेस्त्र ।।

किसी भी प्राणधारी को मत सताओ, काम जो चाहो तुम करो। क्यों कि इस से बढ़ कर हमारे धर्म में और कोई पाप नहीं। इससे सिद्ध होता है कि मुस्लिम न्याय प्रिय धर्म है। आज हम जो अपनी मर्जी जिहाद के नाम संसार में कत्लेआम करे, परन्तु कोई भी धर्म ऐसा आदेश नहीं देता। अहिंसा को सब ने श्रेष्ठ माना है।

कबीर जी फरमाते है-

उन झटका उन बिस्मिल कीता दया दोहां से भागी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, आग दोहां घर लागी ।।

श्री गुरुनानकदेव जी की सम्मति-

जिस रसोई चे चढ़या मांस, दया धर्म दा होया नास।

श्री गुरु ग्रन्थसाहिब-

प्रीतम जान लियो जग माहिं ।
अपने सुख से ही जग बांध्यों, कोउ काहू को नाहिं ।।
सुख में आन बहुत मिल बैठत, रहत चहूँ दिस घेरे ।
विपत पड़े सब ही संग छोड़त कोउ न आवत नेरे ।।
घर की नार बहुत दिन जासौ, रहत सदा संग लागी ?
जब ही हंस तजी यह काया, प्रेत प्रेत कह भागी ।।
इह विध का व्यवहार बान्यो है, जासो नेह लगायो ।
अन्त वार नानक दिन हरि जी, कोउ काम न आयो ।।

श्री गुरुनानकदेव जी सब जीव अपना सुख चाहते हैं,खुशी में सब मित्र बन जाते हैं, जब कोई संकट आ जाये तो कोई नजदीक नहीं आता, पत्नी जो पति से अति प्यार रखती है, सदैव उसके साथ रहती है, परन्तु जब देह से आत्मा निकल जाती है, तो वह शरीर भी भूत-प्रेत नजर आता है। संसार की यह रीति-रिवाज है, केवल अन्त समय प्रभु ही साथ देगा।

वृक्षों के फूलों में असंख्यात जीव होते हैं, जिस की हिंसा का पाप उसी को लगता है जो उनको तोड़ता है व देवताओं की मूर्तियो पर चढ़ाता है । हिंसा न करना ही महान यज्ञ है ,अहिंसा ही परम धर्म है, सत्य है कायरता नहीं ।

वेशाली के महाराजा चेटक जो भगवान महावीर का उपासक ही नहीं, महावीर का संसारी मामा भी था और अपनी ही पुत्री महारानी चेलना धर्मपत्नी महाराजा श्रेणिक के पुत्र महाराजा कोणिक जो था महावीर का

उपासक (महावीर की माता त्रिशला की भतीजी का बेटा) परन्तु उसकी उपासना अहं –अहंकार से केवल अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए। पिता को मृत्यु दण्ड दिया और भाई विहल कुमार से आठारह लड़ी हार और संचेतक हाथी की मांग की जो उसको महाराज श्रेणिक दे गये थे। वह षडयन्त्र समझ नाना महाराजा चेटक की शरण में चला गया, वे श्रमणोपासक होते हुए उसकी सुरक्षा को अपना धर्म समझा और अपने अधीन राजाओं से विमर्श किया और कहा- शरणागत की रक्षा हमारा धर्म है और यह तो मेरा दोहता है, महाराज कोणिक नीचता पर आ गया है, हम हिंसा नहीं चाहते पर हम कायर नहीं हैं, आपका क्या विचार है, सब एक स्वर बोले हम युद्ध के लिए तैयार है। चेटक का सेनापति वरुण जो ऋद्धिसम्पन्न था को चेटक का निमन्त्रण मिला तो उस दिन उस का बेला (दो व्रत) था वह बिना पारे तेला ग्रहण कर रथमूसल संग्राम में उतरा सामने कोणिक का सेनापति ने कहा- चला तेरा शस्त्र मैं सावधान हूँ। " नहीं मित्र, मैं श्रमणोपासक हूँ, जब तक मुझ पर कोई वार नहीं करता, मैं अपना शस्त्र नहीं चलाता, तुम्हारे वार के बाद मैं प्रहार करूँगा। इतने में कोणिक के सेनापति ने वार कर दिया जो वरुण की छाती में धस गया और बिना प्रवाह वरुण ने बाण चलाया जिस से शत्रु क्षत-विक्षत हो कर मृत्यु को प्राप्त हुआ। घायल वरुण ने रणक्षेत्र से अपना रथ हटाया, बाण निकाला,घोड़े खोले और मुक्त कर दिया। संथारा ग्रहण कर अरिहन्तो-भगवंतो को नमस्कार किया, हे भगवन्, आप मुझे देख रहे हैं पहले मैंने आपसे जीवन पर्यन्त स्थूल परिग्रह किया था अब मैं पापों का सर्वथा त्याग, अन्नशन-पानादि और इस शरीर का भी त्याग करता हूँ। अहिंसक होते हुए भी युद्ध किया और शत्रु का विनाश किया।

ऐसे थे महाराजा प्रसन्नचन्द्र जो महावीर के उपासक थे, युद्धादि से घृणा कर अपने पुत्र को राज सौंप कर सन्यास ग्रहण किया और तपस्या में लीन हो गये, वह समाधि लगाए एक चित खड़े थे कि दो सिपाही वहां से गुजरे, एक ने बोला देखो कितनी कठिन तपस्या कर रहा है, दूसरे ने कहा-धिक्कार है अपने

अव्यस्क पुत्र को राज सौंप आया है जिस पर अन्य राजा ने आक्रमण कर दिया है यह अवाज तपस्वी के कानों में पड़ गयी और सोचा मैं देखता हूँ कौन विजयी होता है, समाधि में युद्ध करने लगाल और वहां से महाराजा श्रेणिक निकला, नमस्कार कर भगवान के चरणों में पहुँचा और कहने लगा, यह तपस्वी मर कर कहां जाएगा, भगवन-नरक गति में, इतने में तपस्वी ने अपने सिर पर हाथ लगाया, ओह मैं तो संन्यासी हूं ऐसे विचार क्यों से प्रायश्चित करने लगा कि देव दुन्दभि बज गयी, श्रेणिक भगवान यह क्या- भगवान महावीर तपस्वी केवलज्ञानी हो गया।

।। अहिंसा परमो धर्म ।।

तलवार की धार भी सह सकता है आदमी।
गोली की बौछार भी सह सकता है आदमी
किन्तु इन सब से अधिक असर करती है वह
बोली की मार नहीं सह सकता है आदमी ।।

ज्ञान और विज्ञान

विश्व में अनेकों विश्वविद्यालय अनुसंधान केन्द्र हैं जो विभिन्न विषयों पर गहन खोज कर रहें हैं विशेषकर खगोल पर और सूर्य,चाँद,बुद्ध,वृहस्पति, शुक्र ग्रहों पर मानव जीवन के लिए उपयोगिता पर विचार कर रहें हैं, यह खोज यन्त्रों के माध्यम से होती है वह है विज्ञान। खोज करने वाले विद्वान हो सकते हैं, ज्ञानी नही। जैन संस्कृति में ज्ञान की परिभाषा तप और त्याग के बल पर अपने

अन्तःकरण को जगाना है । जो हजारों वर्ष पूर्व कुछ भव्य आत्माओं ने अपने अन्तकरण के चार कर्मों (ज्ञानावर्णीय, दर्शनावर्णीय, मोहनीय और अन्तराय)को क्षय कर को जागृत कर केवल्य ज्ञान प्राप्त किया जिस अलौकिक दृष्टि से वह तीन लोक के ज्ञाता बन गये और पूर्ण ब्रह्मांड को देखने में सक्षम होकर तीन लोक की व्याख्या की और अनेक चन्द्र-सूर्य बताए । यह है ज्ञानी और पूर्णतय विज्ञानी पुरुषों का काम, जो जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकर कहलाते है इन्होंने ब्रह्मांड ही नही वर्तमान,भूत और भविष्य में होने वाली गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला जो जैन आगमों में विस्तार पूर्वक उपल्ब्ध है। आज मानव विश्व की चकाचौंध में अज्ञानता के अन्धकार में भटक रहा है। भले ही वैज्ञानिक चाँद और मंगल पर अपना अधिकार करने का प्रयास कर रहे हैं और अन्य ग्रहों पर पानी,मानव एवं अन्य वस्तुओं की खोज में अपने-अपने अनुमान लगाते हैं परन्तु जैन दर्शन भरत क्षेत्र के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों का भी वर्णन करते हैं जहां पृथ्वी, सागर, पहाड़ और नदियों के साथ मानव भी विराजमान हैं। यह हैं धातकीखण्ड, महाविदेह क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र व क्षीर सागर और लवण समुन्द्र आदि। जैन दर्शन यह भी मानता है कि सूर्य अनेक हैं । दैनिक पंजाब केसरी दिनांक 4 अप्रैल 2016 में प्रकाशित समाचार के अनुसार वैज्ञानिकों को बृहस्पति आकार से बड़ा एक ग्रह दृष्टिगोचर हुआ है, जिसमें तीन सूर्य दिखाई देते हैं।

वाशिंगटन-3 अप्रैल अन्तरिक्ष वैज्ञानिकों ने बृहस्पति के आकार के नए ग्रह की खोज की है. इस ग्रह के तीन सूर्य हैं-अमरीका की हावर्ड सैंटर फॉर एस्ट्रोफिजक्स के शोधकर्त्ताओं ने इस ग्रह की खोज की है। ऐसे बहुत कम ग्रह हैं जहाँ एक से अधिक सूर्य हैं।

जैन दर्शन को यह ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ ? जिन महान आत्माओं ने अपनी आत्मा को परम बना लिया और ज्ञान के प्रकाश में प्रकाशमान हो गए अर्थात

केवलज्ञान प्राप्त कर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान होकर दृष्टि से तीन लोक को देख लिया और परमात्मा कहलाते हैं। प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति है, परन्तु हम सब ने अपनी-अपनी आत्मा के ऊपर आठ कर्मों का आवरण ओढ़ रखा है, जो आत्मा से परमात्मा बनने में बाधक है। वह कर्म है-ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, वेदनीय, अन्तराय, नाम,गोत्र और आयुष्य। इन्हीं कर्मों से हम सुख-दुःख का अनुभव करते हैं और कहते हैं कि यह जो सब होता है ईश्वर करता है। परन्तु यह सब हमारे पूर्वजन्मों के संचित कर्म हैं।

पृथ्वी पर मेरु पर्वत के चारों और पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक 100000 योजन का लम्बा चौड़ा गोलाकार जम्बूद्वीप नामक द्वीप है। जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत से 45000 योजन दक्षिण दिशा में विजय द्वार के अन्दर भरत नामक क्षेत्र है पूर्व में खण्डगुफा और पश्चिम में तमसगुफा जिनसे सिन्धु और गंगा नदियां वैताढ्य पर्वत के नीचे से निकल कर आती है। जम्बूद्वीप की उत्तरदिशा के अपराजित द्वार के अन्दर ठीक भरत क्षेत्र के समान ही ऐरावत क्षेत्र है। मेरुपर्वत के पूर्व और पश्चिम में भद्रशाल वन आदि सब को मिलाकर 100000 योजन लम्बा,चौड़ा महाविदेह क्षेत्र है जहां मानव जीवन की आयु हजारों वर्ष की होती है। वहाँ आज भी बीस विहरमान (केवली भगवान) विचरण करते हैं। श्री सीमंदर स्वामी भारत भूमि के निकट है। जम्बूद्वीप में दो चन्द्रमा और दो सूर्य, लवणसमुद्र में 4 चन्द्र और 4 सूर्य धातकी खण्ड में 12 चन्द्र और 12 सूर्य, पुष्कर द्वीप में 72, चन्द्र और 72 सूर्य हैं कुल 132 चन्द्र और 172 सूर्य हैं। जहां आज के वैज्ञांनिको का ज्ञान असंभव है।

श्री गुरुनानक देव जी ने अपनें बनाए हुए जपजी साहिब की बाईसवीं पौड़ी में लिखते हैं कि- *पताला पाताल लख, आकाशा आकाश औडक, भाल सके वेद कहत इकबाल।*

आज विश्व के वैज्ञानिक पृथ्वी के उपग्रहो तक ही अध्ययन कर सकते है और सफलता भी पाई है परन्तु वहाँ मानव जीवन की खोज असंभव है । वैदिक शास्त्रों में भी वर्णन आता है कि श्री नारद जी अपनी दिव्य ज्ञान शक्ति से पूर्ण ब्रह्मांड का भ्रमण करते थे और एकबार इनके कहने पर धातरीखण्ड का महाराज पद्मनाभ द्रौपदी का अपहरण कर ले गया, पांडवो ने खोज की परन्तु सफलता नहीं मिली तब श्री कृष्ण जी ने पता लगा लिया और पांडवो को साथ लेकर वहाँ से चल दिए। वहाँ पहुँच कर पांडवो से कहा युद्ध करो गे या मैं करूँ, तो पांडवो ने अपनी शक्ति पर मान से कहा, हम छुड़ा लेगें और बुरी तरह परास्त हुए। तब श्री कृष्ण जी ने अवने पैर की एक ठोकर से उसके महल का दरवाजा ध्वस्त कर दिया और देवकी को मुक्त करवा भरत क्षेत्र में आ गये।आज के वैज्ञानिकों की खोज पर हमें गर्व है, परन्तु उनका ध्येय केवल उपग्रहों से विश्व पर नजर रखने का प्रयास है। वह विद्वान है ज्ञानी नहीं।

आदमी के हृदय में अनुराग होना चाहिए
आदमी के जिगर में एक आग होना चाहिए
जीवन में सारी बातों को भूल जाने के लिए
आदमी के जीवन में कुछ त्याग होना चाहिए
।

Type equation here. **सृष्टि**

सृष्टि की रचना कब हुई, कैसे हुई और कहाँ हुई, इस पर सब के अलग-अलग मत है। वैष्णव इसको ब्रह्मा, विष्णु महेष ही इसके कर्त्ता-धर्त्ता मानते हैं, जबकि श्रमण संस्कृति इसको आदि-अनादि मानती है। वर्तमान में चौबीस तीर्थंकरों में से प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव इस युग के निर्माता मानते हैं और यह भी मानते हैं ऐसी अनेकों चौबीसियाँ पूर्व मे हो चुकी है, और आगे भी होती रहेंगी। जो सिद्ध-बुद्ध है। वहीं सिद्ध-बुद्ध ब्रह्मा हैं, जो अनन्त ज्ञान के भंडार है। इस युग के निर्माता भगवान ऋषभदेव ने अपनी पुत्री ब्रह्मी और सुन्दरी को समस्त ज्ञान दिया। ब्रह्मी को लेखन एवं सुन्दरी को पूरे ब्रह्मांड का ज्ञान दिया जो वैष्णव संस्कृति में वेद कहलाते है। मनुष्य को 72 कला और स्त्री की 64 कला का ज्ञान बताया। जो उस समय से लेकर समस्त ऋषि, मुनियों एवं संन्यासियों को कण्ठस्त होते थे। तीर्थंकरों ने अपनी दिव्य दृष्टि से तीन लोक का वर्णन किया, जिसमें भरत क्षेत्र (जिसमें हम रह रहें है) के अतिरिक्त महाविदेह क्षेत्र, ऐरावत क्षेत्र और घातकी खण्ड जहाँ पर हम जैसे मनुष्य एवं संसार बसता है और वैज्ञानिक इससे अनभिज है। जैन दर्शन काल को अवसर्पिणिकाल और उत्सिर्पणिकाल, प्रत्येक के छः छः भाग आरे कहलाते है। जो इस प्रकार हैं-

1	सुषमा-सुषम	चार क्रोड़ाकोड़ी सागर का
2	सुषम	तीन क्रोड़ाकोड़ी सागर का
3	सुषमा-दुःषम	दो क्रोड़ाकोड़ी सागर का
4	दुःषमा-सुषम	42000वर्ष कम एक क्रोड़ाकोड़ी
5	दुषम	21000 वर्ष का
6	दुषमा-दुषम	21000 वर्ष का

चौबीस तीर्थंकर का परिचय

इस अवसर्पिणिकाल में भरतक्षेत्र में सर्वप्रथम भगवान ऋषभदेव ने तृतिय आरक की समाप्ति में 996 वर्ष 3 मास 15 दिन पूर्व एक लाख पूर्व का समय शेष रहते हुए धर्म की स्थापना की। पुण्यात्मा तीर्थंकर गोत्र के लिए शुद्ध भाव से दान-पुनः सेवा आदि से उपार्जन करते हैं। भगवान ऋषभदेव अपने पूर्व जन्मों मे एकबार

कुछ सन्त आहार लेने आए, घर के रसोड़े में सचित (निर्दोष) आहार नहीं था परन्तु घृत (घी) पड़ा था, मुनिराजों को घी के लिए कहा, सन्तो ने पात्र रख दिया, उत्तम भाव से घृत दान किया, उन उत्तम भावों से मोक्ष के बीज सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई। फिर युगलिक भव प्राप्त किया और आयुष्य पूर्ण कर विद्याधर देव वहाँ से च्यव कर राज्य घराने में जन्म लिया और नाम मिला महाबल, राज्यभिषेक के पश्चात कुशलता पूर्वक राज्य संचालन करने लगे। इनके चार मुक्यमन्त्री थे। जो इस प्रकार हैं- स्वयंबुद्ध, संभिन्नमति, शतमति और महामति, इनमें से स्वयंबुद्ध विशेष बुद्धिमान और राजा का हितैषी था। महाराजा महाबल भोगों मे व्यस्त हो गया, विषय-विकार रूपी शत्रुओं ने राजा पर अपना अधिकार कर लिया। स्वयंबुद्ध ने विचार किया पूर्व भव का पुण्य महाराज यूं ही भोगों में लुटा रहें हैं, मेरा कृतव्य बनता है कि महाराज को धर्म के मार्ग पर लाऊँ।

स्वयंबुद्ध महाराज से निवेदन किया," महाराज! आप अपनी रूचि बदलें। विषय-विकारों की संगत छोड़ धर्म में मन लगावें। जिस प्रकार चारित्र रहित साधु, शस्त्र रहित सेना, नेत्र रहित मुँह शोभा नहीं देते, उसी प्रकार धर्म रहित मानव जीवन सोभा नहीं देते। दुर्गति होती है। धर्म जीव को सुख-समृद्धि देने वाला है।"

स्वयंबुद्ध की बात मन्त्री संभिन्नमति को पसन्द नहीं आई, वह स्वय नास्तिक था, कहने लगा आप स्वामी की प्रसन्नता नहीं देख सकते।

" हे स्वामिन्! आप धर्म के भ्रमजाल में न फंसे, अपने सुखोपभोग में मग्न रहे।"

स्वयंबुद्ध और संभिन्नमति में खूब वाद-विवाद हुआ।

भोग चाहे नष्टकारी हो परन्तु भोगी से वह दूर नहीं होते। क्षणिकवादी शतमति शान्त रहा परन्तु महामति ने स्वयंबुद्ध को कहा, आप किस षडयन्त्र में पड़ गये हैं, विश्व के सुखों को छोड़कर अपनी आत्मा को धोखा देना है।

स्वयंबुद्ध निराश होकर भी कहने लगा, मन्त्री की मन्त्रणा है सही दिशा देना, विचार करने लगा। स्वयंबुद्ध चारण मुनियों के पास गये, उनसे महाराज के जीवन सम्बन्धी वार्तालाप किया। महाराज की आयुष्य के बारे पूछा- महाराज की आयु केवल एक महीना ही शेष रह गई है, जो स्वयंबुद्ध ने महाराज को बतला दिया, महाराज चौंक गया और कहने लगा-हे मित्र, तुम मेरे हितकारी हो, अब तुम्हीं बताओ इस अल्पकाल में मैं क्या कर सकता हूँ।

मन्त्री, महाराज! घबराईये नहीं स्वस्थ रहें और धर्म-पालन कर लीजिए। एक दिन का धर्म पालन भी मुक्ती दे सकता है, तो स्वर्ग प्राप्ति कितनी दूर है ? महाराज ने सब कुछ त्याग कर प्रव्रज्या ग्रहण कर स्वर्ग गमन किया। यह भगवान ऋषभदेव से पूर्व का भव था।

जीवानन्द वैद्य, उनके साथी और कुष्टरोगी महात्मा का उपचार

जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र में सुविधि नाम के घर जीवानन्द नाम का पुत्र पैदा हुए। ईशान नरेश की रानी कनकावती के सुबुद्धि पुत्र, सागरदत्त सार्थवाहक के पूर्णभद्र और धनश्रेष्ठी के गुणाकार और ईश्वरदत्त के केशव नाम के पुत्र पैदा हुए। यह छहों बालक सुखपूर्वक किशोरावस्था प्राप्त कर मित्र बन गये। जीवानन्द वैद्य आयुर्वेद में अति निष्णात हुआ, वह सभी वेद्यों में विशेषज्ञ एवं सम्मानीय थे। एक बार सब इकट्ठे बैठे थे कि एक मुनिराज भिक्षा के लिए गये, उनका देह कृश था कुष्टरोग से पीड़ित थे, तन में कीड़े पड़े हुए थे, असह्य पीड़ा होने से भी वह औषधोपचार ही नहीं करते थे और शान्तभाव से सहन करते थे।

उन्हें देखकर एक राजकुमार ने जीवानन्द से कहा- तुम कुशल वैद्य हो, इन मुनिराज का उपचार क्यों नहीं करते, जीवानन्द ने कहा इनके उपचार के लिए तीन वस्तुओं की आवश्यकता है, मेरे पास केवल एक लक्षपाक तेल है, वह तीन वस्तुएं रत्नकम्बल,

गोशीर्षचन्दन और लक्षपाक तेल । जीवानन्द की बात सुनकर कहने लगे हम दो वस्तुएं लाएंगें। वह बजार गये एक सेठ के पास जाकर दोनो वस्तुएं मांगी, प्रत्येक

वस्तु का मोल एक लाख सोनैया था। सेठ ने कहा- इन वस्तुओं का क्या प्रयोग करोगे ? उन्होंने कहा- एक तपस्वी मुनिराज की औषधि मे उपयुक्त होगी। सेठ ने कहा, महानुभाव! आप यह दोनों वस्तुएं ले जायें, मुल्य की आवश्यकता नहीं। आप धन्य है युवावस्था में भी धर्म का सेवन करते हैं, आप के प्रताप से मुझे धर्मलाभ मिल रहा है। इसलिए मैं आपका आभारी हूँ।

मित्र-मण्डली वह वस्तुएं लेकर मुनि जी के पास वन में आए, मुनि वटवृक्ष के नीचे कायोत्सर्ग कर रहे थे। वन्दना कर निवेदन किया, हम आपके ध्यान में विघ्न डालकर उपचार करेंगे उसकी क्षमा चाहते हैं। वे तत्काल एक मृत गाय का शव लाए और एक ओर रख दिया। मुनिश्री जी के शरीर पर लक्षपाक तेल का मर्दन किया कि वह तेल शरीर की नसों मे चला जाए, अति उष्ण वाले तेल से मुनि मूर्छित हो गये, तेल के प्रभाव से कीड़े बाहर आ गये, जीवनन्द ने उपर रत्न कम्बल दे दिया जिससे वह कीड़े रत्न कम्बल में आने लगे और मुनि जी को रत्नकम्बल की शीतलता से मुनि जी को अराम आने लगा, फिर झब कीड़े रत्नकम्बल पर आ गये तो धीरे से उठाकर गाय के शव पर डाल दिया, कीड़े गाय के शव मे चले गये, इसके बाद तपस्वीराज के शरीर पर गोशीर्षचन्दन का लेप किया, जिससे मुनि जी को शान्ती मिल गई, ऐसा तीन बार किया, जिससे तपस्वीराज का शरीर किटाणुमुक्त हो गया और मुनिवर विहार कर गये। कालन्तर छहों मित्रों ने दीक्षा लेकर संयम पालन करते हुए तप द्वारा अन्नशन से देह त्याग कर बारहवें देवलोक में इन्द्र के समान देव हुए। यह भी सिद्ध होता है कि भगवान ऋषभदेव से भी बहुत पहले धर्म था। भवभ्रमण करते हुए तेरहवे भव में ऋषभ हुए।

****

भगवान ऋषभदेव

हमारा अतीत बहुत बड़ा आदर्श, सुन्दर और स्वर्णिम रहा है। हम लोगों के प्रमाद के कारण वह धूमिल हो रहा है। आज भी भारतीय दर्शन की संसार में

उच्चकोटि के तत्त्वचिन्तकों के हृदय पर गहरी छाप है। भारतीय संस्कृति मानव संस्कृति का आदि-स्त्रोत है, भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हमारे पूर्वज अत्याधिक सम्मानीय थे, यह हमारे शास्त्र और धार्मिक ग्रन्थ प्रमाणित करते हैं कि अमोघ शक्तियाँ, अमोघ बाण, आग्नेयास्त्र, वायव्स्त्र, ब्रह्मास्त्र, रौद्रास्त्र, वैश्णवस्त्र, वरुणास्त्र,रथमूस्लास्त्र (अदुनिक टैंकों से भी अत्याधिक संहारक स्वचलित भीषण अस्त्र), महाशिलकण्टक, शतघ्नी आदि संहारक अस्त्रों का निर्माण और उनका प्रयोग हमारे पूर्वज जानते थे।

यदि हम वास्तव में शुद्ध हृदय से अपनी खोई हुई समृद्धि प्रतिष्ठा और गौरव गरिमा को पुनः प्राप्त करना है तो हमें इतिहास का वास्तविक ज्ञान करना होगा। यह वह सीढ़ी है जो सदा उपर चढ़ती है नीचे नहीं गिरने देती।

मरुदेवी माता ने चौदह स्वप्न देखे और महाराज नाभि ने स्वप्नो के फल पर अधारित कहा, हमारे यहाँ देवलोक से आने वाले महापराक्रमी,महाप्रतापी बालक का आगमन होगा,ऐसे स्वप्न तीर्थंकर और चक्रवर्ती की माताएं देखती हैं। समय आने पर बाल-जिनेश्वर प्रभु ऋषभ का जन्मभिषेक महामहोत्सव सम्पन्न कर चारों जाति के देव-देवेन्द्र नन्दीश्वर द्वीप में गये और वहाँ उन्होंने प्रभु के जन्म का अष्टाह्निक महा-महोत्सव मनाया।

प्रभु की एक-एक मधुर मुस्कान पर, बाल-लीला पर माता मरुदेवी और पिता नाभिराजा आत्मविभोर हो झूले पर झूलते-झूलते झूम जाते हैं। उस समय यौगलिक युग था युगल ही पैदा होते थे, उस समय की एक घटना घटी कि एक युगल बाल-क्रीड़ा कर रहा था कि सहसा उस बालक पर तालवृक्ष का फल गिरा और उसकी मृत्यु हो गई, यह इस युग की प्रथम अकाल मृत्यु थी, इस घटना को देखकर यौगलिक सहम गये, नाभि कुलकर ने उन को समझाया कि अब काल करवट ले रहा है, ये सब उसी का प्रभाव है और उस बालिका को नाभिराजा अपने भवन में ले आया। उसका नाम सुनन्दा रखा, सुनन्दा भी अब सुमंगला और ऋषभ के साथ-साथ बाल-लीलाएं करने लगी।

वंश और गौत्र स्थापना

उस समय मानव समाज किसी कुल, जाति व वंश के विभाग नहीं थे। प्रभु ऋषभ का उस समय न कोई वंश था न कोई गोत्र था। बाल क्रीड़ा कर रहे थे कि वज्रपाणिदेव शुक्र उनके समक्ष उपस्थित हुए देवेन्द्र के हाथ मे इक्षुदण्ड देखकर बालक ऋषभ ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और इक्षु को प्राप्त कर लिया यह देखकर इन्द्र ने वंश का नाम इक्ष्वाकु वंश रखा और गोत्र कश्यप रखा।

समय के बढ़ते ऋ।षभ किशोर वय से यौवन में ही पूर्व जन्मों की तपस्या से ज्ञान का अक्ष. भण्डार संचित कर लिया, यह ज्ञान तो गर्भ में ही प्राप्त कर लिया था, जब भोगसमर्थ हे तो लावण्य सम्पन्ना सुमंगला और सुनंदा के साथ विवाह सम्पन्न किया गया। यह भी उस समय का पहला विवाह था जो ऋषभ ने विवाह परम्परा का सूत्रपात किया। देवी सुमंगला ने प्रथम गर्भधारण में भी चौदह स्वप्न देखे, फलानुसार षट्खण्डाधिपति चक्रवर्ती सम्राट भरत का जन्म हुआ। कालन्तर में 48 युगल 98 पुत्रों को जन्म दिया। दो पुत्रिया हुई ब्राह्मी और सुन्दरी।

83 लाख पूर्व गृहस्थ मे रहकर समस्त ज्ञान दिया, सर्वप्रथम असि,मसि और कसि और मानव के मन में भातृभाव पैदा किया। इसके पश्चात गृहत्यागकर ऋषि परम्परा चालु हुई सन्यास ग्रहण किया इनके साथ 4000 अधिकारियों, सेवकों ने भी सन्यास ग्रहण किया। कठिन तपस्या के फलस्वरुप विचरते हुए सचित भिक्षा नहीं मिलती क्योंकि किसी को ज्ञान ही नहीं था कि भिक्षा कैसी देनी है। लगभग एक वर्ष तक भ्रमण करते रहे, मन में कोई ग्लानि नहीं, विचरते हुए बाहुबली के पौत्र श्रेयांस कुमार के घर हस्तिनापुर में पधारे, भवन में इक्ष्युरस के घड़े पड़े थे, श्रेयांस कुमार ने विधिवत वन्दना कर इक्ष्यु रस का निवेदन किया, भगवान ने अञ्जलिपुट आगे किया तो श्रेयांस ने रस उड़ेल दिया, एक बूँद भी नीचे नहीं गिरने दी, वह दिन वैशाख शुक्ला तृतिया अक्षेय तृतिया कहलाती है, देवों ने पंच-दिव्य की वर्षा की।

संवत्सर पर्यन्त भगवान मौन धारण कर निरन्तर आर्य और अनार्य क्षेत्रों मे विचरते रहे, हस्तिनापुर में भी घर-घर विचरते रहे, प्रत्येक घर से विशुद्ध आहार न मिलने से निराहार लौटते रहे। दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात एक हजार वर्ष तक ग्रामानिग्राम विचरण करते तपश्चरण द्वारा आत्मस्वरूप को प्रकाशित करते रहे। फाल्गुण कृष्णा एकादशी के दिन अष्टम तप के साथ चार घातिक कर्मों को क्षय कर केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। केवलज्ञान की प्राप्ति से अब अरिहन्त हो गये। बारह गुण प्रकट हुए जो इस प्रकार हैं-

(1)अनन्त ज्ञान (2) अनन्त दर्शन (3) अनन्त चारित्र (वीतराग भव) (4) अनन्च बल-वीर्य (5) अशोक वृक्ष (6) देवकृत पुष्प-वृष्टि (7) दिव्य-ध्वनि (8) चामर (9) स्फटिक सिंहासन (10) छत्र-त्रय (11) आकाश में देव-दुदभि (12) भामण्डल । पांच से बारह तक देवों द्वारा यह महिमा की जाती है।

- सामान्य अरिहन्त और तीर्थंकर अरिहन्त में खास विशेषताएं होती है। तीर्थंकरो के 34 अतिशय रुप में होती हैं। 99 हजार पूर्व तक अरिहन्त पद पर धर्म देशना करते हुए, तीर्थ स्थापना की, साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका। अन्त समय जानकर 10000 अन्तेवासी साधुओं के साथ भगवान ऋषभदेव अष्टापद पर्वत पर संथारा ग्रहण कर माघ कृष्ण त्रियोदशी 6 दिन के उपवास कर निर्वाण प्राप्त हो गये।

जैन धर्म में 63 श्लाका पुरुषों का बहुत महत्व है जो पूर्व जन्मों में महान तप कर इस धरती पर अवतरण करते हैं । जो इस प्रकार हैं-

चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ बलदेव, नौ वासुदेव और नौ प्रतिवासुदेव । तीन चक्रवर्ती श्री शान्ती नाथ, श्री अरहनाथ और श्री कुन्थुनाथ सभी संसार सुखों को त्याग कर भगवती दीक्षा लेकर चारित्र धर्म का पालन करते हुए तीर्थंकर पद प्राप्त करते हुए मोक्षगामी सिद्ध हो गये। प्रथम चक्रवर्ती भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत हुए, राज-पाट पुत्र को

संभालकर दीक्षा लेकर वह भी मोक्षगामी हुए। सगर चक्रवर्ती भगवान अजितनाथ के समय अपने 500 पुत्रों के शोक में राज्य को ठुकरा कर भगवान अजितनाथ के आगे दीक्षा लेकर कठोर तपस्या कर मोक्ष पधारे।

लोक में ब्रह्मा नाम का जो देव प्रसिद्ध है, वह भगवान ऋषभदेव को छोड़ अन्य कोई नही। जब ऋषभदेव को केवलज्ञान हुआ वही ब्रह्मज्ञान है, जब वह संसार में रहकर राज्य का कार्यभार संभाला तो समस्त विद्याएं (दुःख- सुख) जीने की कला सिखाई तब वह विष्णु कहाए, संसार से मुक्त होकर संन्यास धारण किया तो शिव हो गये। ऋषि शब्द भी ऋषभ से ही बना, जिन्हों ने ऋषभ के ज्ञान को धारण किया, ऋषि कहलाए।

भगवान ऋषभदेव जी तीसरे आरे के अन्त में हुए, इनके सौ पुत्र थे, जिसमें भरत महाराज प्रथम चक्रवर्ती हुए। भरत महाराज ने अपने बड़े बेटे सूर्यकुमार को राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। इन से सूर्यवंश चला है. श्री रामचन्द्र भी इसी वंश के थे।

भगवान अजितनाथ

भगवान ऋषभदेव जी के निर्वाण पद प्राप्त करने के पश्चात लाख करोड़ाकरोड़ सागरोपम के पश्चात चौथा आरा दुषम-सुषमा नामक मे स्वर्ग से च्यव कर दूसरे तीर्थंकर पद के भावी अधिकारी श्री अजितनाथ आयोध्या नगरी के राजा जितशत्रु की रानी विजया की कोख में पधारे। इनका जन्म माघ शुक्ला 8 को हुआ। वहां उन्होंने एकहत्तर लाख पूर्व तक गृहस्थावस्था राजसुखों का उपभोग किया। माघ शुक्ला 9 को अपनी राजधानी के उद्यान में संसार के प्रति त्याग कर दीक्षा व्रत धारण किया और बारह वर्ष के घोर तपस्या पर पौष कृष्ण 11 को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। एक लाख पूर्व तक चारित्र धर्म का पालन कर सब सम्पूर्ण कर्मों का नाश कर चेत्र शुक्ला 5 को मोक्ष पधारे। इनका गुण सम्पन्न नाम इस कारण रखा गया कि जब यह गर्भ में थे तो इनकी माता इनके पिता के साथ पासा खेलती थी और सदा विजय (अजेय) रही, जिससे इनका नाम अजित रखा गया। इनके चाचा सुमित्र का पुत्र सागर चक्रवर्ती हुआ।

भगवान संभवनाथ

भगवान अजितनाथ जी के निर्वाण पधारने के 37 लाख करोड़ सागरोपम के पश्चात तीसरे तीर्थंकर भगवान संभवनाथ जी इस लोक मे पधारे। इनका जन्म माघ शुक्ला 14 को हुआ। श्रवस्ती नगरी के जितारी राजा और सेवारानी इनके माता-पिता थे। उनासठ लाख पूर्व गृहस्थाश्रम में बीते। अगहन शुक्ला 15 को अपनी जन्म भूमि के ही उपवन में आकर दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के 14 वर्ष पूर्ण होने पर कार्तिक कृष्णा 5 को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। एक लाख पूर्व चारित्रधर्म का पालन करते सारे कर्म क्षय करते हुए चेत्र शुक्ला 5 को मोक्ष पधारे। जब भगवान का जीव गर्भ में आया तो चारों ओर सुकाल-सुख और शान्ति की संभावना होने लगी, जिसके कारण नाम संभवनाथ रखा गया।

भगवान अभिनन्दननाथ

तीसरे तीर्थंकर भगवान संभवनात जी के निर्वाण पद पधारने के दस लाख करोड़ा सागरोपम के पश्चात माघ शुक्ल 9 को आयोध्या में राजा संवर की रानी सिद्धेर्थ की कोख से अभिनन्दन जी का जन्म हुआ। भगवान के गर्भ पधारने और जन्म समय के बीच महाराज संवर के शासन नीति से प्रसन्न होकर चारों ओर से आश्रित मांडलिक राजाओं ने अभिनन्दन पत्र भेंट कर अपनी कृतज्ञता प्रकट की, उस दिन उनकी प्रजा ने बहुत ही आनन्द मनाया, जिससे नवजात शिशु का नाम अभिनन्दन रखा गया। अपनी पैतृक सम्पति का सुख उनचास लाख पूर्व का सुख भोगने के पश्चात माघ शुक्ला 12 अपने ही उपवन मे दीक्षा ग्रहण कर ली। अठाईस वर्ष के बाद पौष कृष्णा 14 को चार कर्मों का नाश करते केवलज्ञानी हो गये। एक लाख पूर्व के अपने दीक्षा व्रत से सम्पूर्ण कर्मों को क्षय कर वैशाख शुक्ला 8 को निर्वाण पद प्राप्त किया।

भगवान सुमतिनाथ

भगवान अबिनन्दन के मोक्ष पधारने के नौ लाख करोड़ सागरोपम के पश्चात वैशाख शुक्ला 8 को आयोध्या के महाराजा मेघ की महारानी मंगल की कोख में भगवान का जन्म हुआ। आप उनतालीस लाख पूर्व तक गृहस्थाश्रम मे

रहे फिर वैसाख शुक्ल 9 को आयोध्या के उपवन में ही दीक्षा ग्रहण कर तपजप मे लीन बीस वर्ष के पश्चात चेत्र शुक्ल 11 को केवलज्ञान प्राप्त किया और एक लाख पूर्व तक चारित्रधर्म का पालन करते सम्पूर्ण अष्ट कर्मों को क्षय कर मोक्ष पधारे। इनकी माता ने किसी विवाद में बहुत ही सुन्दर सुमति प्रदान की जिससे इनका नाम सुमति रखा गया।

भगवान पद्मप्रभ जी

भगवान सुमति नाथ जी के निर्वाण के नब्बे हजार करोड़ सागरोपम के पश्चात कार्तिक कृष्णा 12 को कौशम्बी नगरी के राजा श्रीधर की रानी सुसीवा की कोख से भगवान पद्म प्रभु जी का जन्म हुआ। आप उनतीस लाख पूर्व तक गृहस्थाश्रम में रहे। फिर अपने ही कौशम्बी उद्यान में कार्तिक कृष्णा 13 को दीक्षा ग्रहण की। चेत्र शुक्ला 15 को अनुमान छः वर्ष बाद केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई। एक लाख पूर्व चारित्र धर्म का पालन कर अपने कर्मों को क्षय कर मार्ग शीर्ष कृष्णा 11 को निर्वाण पद प्राप्त किया।

भगवान सुपार्श्वनाथ जी

नौ हजार करोड़ सागरोपम बीत जाने पर जब तीर्थंकर भगवान पद्म प्रभु जी के निर्वाण हो चुका था, उस समय ज्येष्ठ शुक्ला 12 को वाराणासी में राजा प्रतीष्ठ की रानी ने एक सुन्दर सबल और दिव्य शरीरी बालक को जन्म दिया। माता और पुत्र का नाम क्रमशः पृथ्वीदेवी और सुपार्श्व थे। सुपार्श्वनाथ ने उन्नीस लाख पूर्व गृहस्थाश्रम में व्यतीत किये फिर वाराणासी के उपवन में ज्येष्ठ सुदी तेरह को दीक्षा ग्रहण की और 9 मास के पश्चात केवज्ञान फाल्गुण कृष्णा 6 प्राप्त हुआ और फाल्गुण कृष्णा 7 को समस्त कर्मों को क्षय कर सिद्ध हो गये।

भगवान चन्द्र प्रभु जी

सौ करोड़ सागरोपम के पश्चात जब तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ जी निर्वाण काल बीत चुका था तब पोष कृष्ण 12 को चन्द्रपुरी के महाराज महासेन की पत्नी लक्ष्मणा के गर्भ से भगवान चन्द्रप्रभु जी का जन्म हुआ और नौ लाख पूर्व संसार में रहकर पौष कृष्ण 13 को चन्द्रपुरी के उपवन में दीक्षा ग्रहण की

और उसी वर्ष फाल्गुण कृष्णा 7 को केवलज्ञान प्राप्त किया। एक लाख पूर्व चारित्र धर्म का पालन करते हुए भाद्रपद 7 को समस्त कर्मों को क्षय कर पदमपद मोक्ष प्राप्त किया।

भगवान सुविधिनाथ जी

तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभु जी के निर्वाण के पश्चात जब 90 करोड़ सागरोपम का समय बीत चुका था काकन्दी नगरी के राजा सुग्रीव की महारानी रामा ने आगहन कृष्णा 5 को पुत्र रत्न को जन्म दिया नामकरण हुआ सुविधिनाथ एक लाख पूर्व गृहस्थ में रहे और उसी नगरी के उपवन में आगहन कृष्णा 6 को दीक्षा ग्रहण करने के चार मास बाद कार्तिक शुक्ला 3 को केवलज्ञान प्राप्त कर एक लाख चारित्रधर्म का पालन करते हुए समस्त कर्मों को क्षय कर भाद्रपद शुक्ला 1 को मोक्ष पधार गये।

भगवान शीतलनाथ जी

करोड़ सागरोपम व्यतीत होने के पश्चात माघ कृष्णा 12 महाराज दृढ़रथ की महारानी नन्दादेवी की कोख से शीतलनाथ का जन्म हुआ। पचहत्तर हजार पूर्व गृहस्थ में बिताए, तब संसार से विमुख होकर अपनी ही नगरी के उपवन में माघ कृष्णा 12 को दीक्षा ग्रहण की और दूसरे वर्ष ही पौष कृष्णा 14 को केवलज्ञान प्राप्त किया। पचीस हजार पूर्व चारित्र पालन करते समस्त कर्मों को क्षय कर वैशाख कृष्णा 2 को सिद्ध हो गये।

भगवान श्रेयांस नाथ जी

ग्यारहवें तीर्थंकर श्री श्रेयांयनाथ जी का जन्म फाल्गुण कृष्णा 12 भगवान शीतलनाथ जी के निर्वाण समय के सौ सागर छयासठ लाख छबीस हजार वर्ष न्यून एक करोड़ सागरोपम के पश्चात सिंहपुरी नगरी में हुआ। इनके पिता श्री विष्णु जी एवं माता श्रीमति विष्णुदेवी थी। 63 लाख पूर्व संसार में रहे। फाल्गुण कृष्णा त्रियोदशी को श्रवण नक्षत्र में सहस्त्राम्र वन में आशोक वृक्ष के नीचे सम्पूर्ण पापों का नाश कर दीक्षा ग्रहण की। दूसरे दिन सिद्धार्थपुर में राजा नन्द के यहाँ प्रभु का परमान्न से पारणा सम्पन्न हुआ। दो मास तक विविध

ग्रामों मे विचरण करते हुए फाल्गुण कृष्णा 3 को केवलज्ञान की प्राप्ति के पश्चात पोतनपुर पधारने का समाचार प्रथम वासुदेव त्रिपृष्ठ को दी। इनका भाई प्रथम बलदेव अचल हुए।

प्रथम प्रतिवासुदेव अश्वग्रीव को निमितज्ञों की भनिष्यवाणी से जब ज्ञात हुआ कि उसका संहार करने वाला प्रथम वासुदेव का जन्म हो चुका है, वह उसकी खोज में तत्पर रहने लगा।

भगवान वासपूज्य जी

भगवान श्रेयांसनाथ के निर्वाण के पश्चात चौपन सागरोपम बीत जाने के बाद फाल्गुण कृष्णा 14 चम्पापुरी नगरी में श्री वासपूज्य का जन्म हुआ इनके पिता श्री वासुदेव और माता जयदेवी थी। वह चम्पापुरी के राजा-रानी थे।अठारह लाख पूर्व तक संसार में रहे और फाल्गुण कृष्णा 15 को अपने ही उपवन में दीक्षा ग्रहण की। माघ शुक्ला 2 को चार घनघाती कर्म क्षय कर केवलज्ञान प्राप्त किया। चौपन लाख पूर्व चारित्र धर्म का पालन करते समस्त कर्मों को क्षय कर अषाढ़ शुक्ला 14 को मोक्ष पधारे। इन्हीं के समय विजय नामक बलदेव औरद्विपृष्ठ वासुदेव और तारक नाम का प्रतिवासुदेव हुआ।

भगवान श्री विमलनाथ जी

भगवान वासपूज्य के निर्वाण पश्चात तीस सागरोपम बीत जाने पर माघ शुक्ला 3 कम्पलपुरी नगरी के राजा कृतवर्मा की रानी श्यामा देवी की कुक्षी में श्री विमलनाथ जी का जन्म हुआ। पैंतालीस लाख वर्ष तक राजपाट सम्भाला, फिर भव-बन्धन से छुटकारा पाने के लिए माघ शुक्ला 4 को अपनी ही राजधानी के उपवन में दीक्षा ग्रहण की।पौष शुक्ला 6 को केवलज्ञान प्राप्त कर 15 लाख वर्षों तक चारित्र पालन करते हुए सम्पूर्ण कर्मों को क्षय कर अषाढ़ कृष्णा 7 को मोक्ष पधारे।

भगवान श्री अनन्तनाथ जी

पूर्व भव में धातकीखण्ड में अरिष्टा नगरी में महाराज पद्मरथ के भव में तीर्थंकर पद की साधना की, वह शूरवीर और पराक्रमी राजा थे। वहाँ से दसवें स्वर्ग के

ऋद्धिमान देव हुए। वहाँ से च्यव कर अयोध्या नगरी के महाराजा सिंहसेन की महारानी सुयशा की कुक्षी से श्रावण कृष्णा सप्तमी को रेवती नक्षत्र में जन्म लिया। पन्द्रह लाख वर्ष तक सामुचित रीति से राज्य का पालन कर अपने भोग कर्म को क्षीण समझकर मुनिव्रत धारण किया। दीक्षा के दूसरे दिन ही वर्द्धमानपुर में जाकर विजय भूप के यहाँ पारणा किया। तीन वर्ष के पश्चात ग्रामानुग्राम विचरते हुए सहस्त्राम वन मे अशोक वृक्ष के नीचे ध्यानस्थ कर्मों को क्षय कर वैशाख कृष्णा चतुर्दशी को रेवती नक्षत्र मे अष्टम की साधना में केवलज्ञान की उपलब्धि हुई। इन के समय में ही पुरुषोत्तम नाम के वासुदेव और सुप्रभ नाम के बलदेव हुए। तीन वर्ष कम सात लाख वर्ष के बाद एक हजार साधुओं के साथ एक मास का अन्नशन से चेत्र शुक्ला पंचमी को तीस लाख वर्ष की आयु पूर्ण कर सिद्ध-बुद्ध हो गये।

भगवान श्री धर्मनाथ जी

घातकी खण्ड के के पूर्व विदेह भद्दिलपुर के महाराज सिंहरथ दीक्षित होकर संयम तप की साधना से तीर्थंकर नामकर्म की योग्यता प्राप्त कर वैजयन्त विमान में देव हुए, वहाँ से च्यव कर रत्नपुर के महाप्रतापी महाराज भानु की महारानी सुव्रता के गर्भ से वैशाख शुक्ला सप्तमी को पुष्य नक्षत्र में जन्म लिया। दो लाख पचास हजार वर्ष के पश्चात पिता के अनुरोध पर राज्यभार ग्रहण किया और पाँच लाख वर्ष तक राज्य भोग कर दीक्षा ग्रहण की दो वर्ष तक छद्मस्थचर्या से विचरे फिर दधिपर्ण वृक्ष के नीचे ध्यानस्थ पौष शुकला पूर्णिमा के दिन भगवान धर्मनाथ जी को केवलज्ञान, केवलदर्शन की प्राप्ति हुई। दो कम ढ़ाई लाख पूर्व तक विचरण कर लाखों जीवों का उद्धार किया. मोक्षकाल निकट समझकर आठ सौ साधुओं के साथ सम्मेद शिखर पर एक मास का अनशन कर ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को पुष्य नक्षत्र में सिद्ध-बुद्ध मुक्त निर्वाण पद प्राप्त किया।

भगवान शान्तिनाथ जी

पूर्वभव में विदेह के मंगलावती विजय में रत्न संचया नाम की नगरी थी वहाँ के महाराज क्षेमकर की रानी रत्नमाला के वज्रायुध का जन्म हुआ, क्षेमंकर पुत्र को

राज्य देकर दीक्षा ग्रहण की और केवलज्ञान प्राप्त कर भाव तीर्थंकर कहलाए। पन्द्रहवें तीर्थंकर के मोक्ष जाने के पौन पल्योपम न्यून तीन सागरोपम के पश्चात जेष्ठ कृष्णा 13 को श्री शांतीनाथ जी ने जन्म लिया गजपुर के राजा विश्वसेन की रानी अचिरादेवी की कुक्षी से। आप पांचवें चक्रवर्ती हुए। जब आपका जन्म हुआ तो महामारी फैली हुई थी, जिससे माता अचिरादेवी भी इस रोग से अशान्त थी। जब गर्भ में आए तो रोग शान्त हो गया, जिससे आपका नाम शान्तिनाथ रखा गया। आप 75 हजार वर्ष गृहस्थ में रहे, वर्षी दान देकर नगरी के उपवन में दीक्षा ग्रहण की ज्येष्ठ कृष्णा 4 को। एक वर्ष के पश्चात ही पौष शुक्ला 9 को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। 25 हजार वर्ष चारित्र धर्म का पालन करते हुए सर्व ग्रह क्षय कर ज्येष्ठ कृष्णा 13 को मोक्ष पधार गये।

भगवान कुन्थु नाथ जी

भगवान शान्ती नाथ जी निर्वाण काल के आधा पल्योपम समय व्यतीत होने पर गजपुर के राजा सुर की रानी श्री नाम की कुक्षी से वैसाख कृष्ण 14 को भगवान श्री कुन्थुनाथ जी का जन्म हुआ। गर्भ समय में माता ने कुन्थु नाम के रत्नों की माला देखी थी जिससे इनका नाम कुन्थु रखा गया। आप छटे चक्रकर्ती हुए। आप इकहत्तर हजार दौ सौ पचास वर्ष गृहस्थाश्रम में रहने के पश्चात गजपुर के उपवन में ही चेत्र कृष्ण 5 को दीक्षा ग्रहण कर ली, 16 वर्ष के पश्चात चेत्र शुक्ला 3 को केवलज्ञान प्राप्त हुआ, 23750 वर्ष तक धर्म देशना देते हुए वैशाख कृष्ण 1 को मोक्ष पद प्राप्त किया। दीक्षा से पहले भारतवर्ष के सम्पूर्ण छः खण्ड पर राज्य किया।

भगवान श्री अरहनाथ जी

17 वें तीर्थंकर के निर्वाण पद प्राप्त किये जब एक करोड़ एक हजार वर्ष न्यून पाव पल्योपम का समय बीत चुका था तब अगहन शुक्ल 10 को गजपुरी के राजा सुदर्शन की रानी देवकी देवी से भगवान अरहनाथ जी का जन्म हुआ। 63 हजार वर्ष तक गृहस्थ जीवन में रहे। सातवें चक्रवर्ती बनकर छः खण्ड पर राज्य किया। इसके पश्चात अगहन 11 को जगपुर के ही उपवन में दीक्षा ग्रहण कर

300 वर्ष तक जन कल्याण के लिए तीर्थ स्थापना करते हुए, केवलज्ञान कार्तिक शुक्ला 12 को प्राप्त किया। 21000 वर्ष तक चारित्रधर्म का पालन करते हुए अगहन शुक्ल 10 को मोक्ष पधारे। इनके निर्वाण के पश्चात और 19वें तीर्थंकर से पूर्व सूँभम नाम के चक्रवर्ती हुए सातवा खण्ड साधन के पर्याय से समुद्र में डूबकर मृत्यु हुई और सातवें नरक में गये।

भगवान श्री मल्लीनाथ जी

अठारहवें तीर्थंकर निर्वाण के बाद एक करोड़ एक हजार वर्ष के पश्चात मिथिला नगरी में राजा कुम्भकार की रानी प्रभावती के गर्भ से अगहन शुक्ल 11 को भगवान मल्लिनाथ का जन्म हुआ। सौ वर्ष तक गृहस्थ में रहे और फिर मिथिला के ही उपवन में अगहन शुक्ल 11 को दीक्षा लेकर उसी दिन केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। तब से 75900 वर्ष धर्मदेशना देते हुए जनकल्याण करते फाल्गुण 12 को मोक्ष पद प्राप्त कर सिद्ध-बुद्ध हो गये।

भगवान श्री मुनि सुव्रत स्वामी जी

भगवान मल्लीनाथ के निर्वाण के 54 लाख वर्ष व्यतीत होने के बाद राजगृह नगरी के सुमित्र राजा की पत्नी पद्मावती रानी से ज्येष्ठ कृष्णा 8 को मुनि सुव्रत का जन्म हुआ। वह 22500 वर्ष गृहस्थाश्रम मे रहने के पश्चात फाल्गुण शुक्ला 12 को अपनी ही राजधानी के उपवन में दीक्षा ग्रहण की। ग्यारह महीने के पश्चात ही केवज्ञान प्राप्त किया। साढ़े सतासी वर्ष तक दीक्षा में सर्व कर्मों को क्षय कर ज्येष्ठ कृष्ण 9 को मोक्षगामी हो गये। इन्ही के समय 9वें चक्रवर्ती महापद्म हुए।

भगवान श्री नमिनाथ जी

भगवान मुनिसुव्रत स्वामी के निर्वाण को छः लाख वर्ष हुए थे कि श्रावण शुक्ला अष्टमी को मथुरापुरी में विजय राजा की महारानी विप्रदेवी ने नमिनाथ को जन्म दिया। आप 9000 वर्ष तक गृहस्थ में रहे फिर अषाढ़ कृष्ण 6 को मथुरापुरी नगरी के उपवन में ही दीक्षा ग्रहण की। 9000 वर्ष पश्चात अगहन

शुक्ला 11 को चार कर्मों को क्षय कर केवलज्ञान प्राप्त किया। एक हजार वर्ष तक चारित्र धर्म का पालन करते हुए वैशाख कृष्णा 10 को मोक्ष पधारे।

भगवान श्री अरिष्टनेमी जी

भगवान नमिनाथ के निर्वाण पधारने के पाँच लाख वर्ष पश्चात राजा समुद्रविजय की महारानी शिवादेवी की कुक्षी से श्रावण शुक्ला 5 को श्री अरिष्टनेमी जी का जन्म हुआ। आप 300 वर्ष गृहस्थाश्रम ब्रह्मचर्य में रहे, विवश करने पर विवाह के लिए सहमत होकर बरात गई तो वहाँ यादवों के मांसाहार परोसने के लिए पशु-पक्षी बाड़े में बन्द किये हुए थे, जो चिल्ला रहे थे, उनकी चीत्कार सुन विवाह छोड़ दीक्षा के लिए वर्षीदान देते हुए राजधानी के उपवन में ही श्रावण शुक्ला 6 को दीक्षा धारण की और 54 दिन के पश्चात ही अश्विन कृष्ण अमावस को केलज्ञान प्राप्त किया, कुछ कम 700 वर्ष धर्म प्रचार करते हुए मोक्ष पधार गये।

भगवान श्री पार्श्वनाथ जी

भगवान अरिष्टनेमी के निर्वाण के 84000 वर्ष पश्चात वाराणासी में महाराजा अश्वसेन की महारानी वामादेवी की कुक्षी से पौष कृष्ण 10 को अवतरित हुए। आप तीस वर्ष तक गृहस्थ में रहे और पौष कृष्ण एकादशी को बनारस के उपवन में ही दीक्षा धारण की, दीक्षा के 84 दिन पश्चात ही चेत्र शुक्ला 4 को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। 70 वर्ष संयम पाला और सर्व कर्म क्षय कर श्रावण शुक्ला अष्टमी को सिद्ध-बुद्ध मोक्ष पधार गये।

भगवान श्री महावीर स्वामी जी

भगवान पार्श्वनाथ निर्वाण के लगभग 250 वर्ष पश्चात महावीर स्वामी मोक्ष पधार गये। आप का जन्म कुण्डलपुर नगरी के महाराज सिद्धार्थ की राऩी त्रिशला की कुक्षी चेत्र सुदी त्रियोदशी को अवतरित हुए। तीस वर्ष पर्याय गृहस्थ में रहते हुए सन्यासी जीवन व्यतीत किया माता-पिता के देवलोक पधारने पर भाई नन्दीवर्धन के कहने पर एक वर्ष तक दान देने के पश्चात संयम ग्रहण कर साढ़े बारह वर्ष तक कठोर तप किया अनेको परीषहो को समता से सहन करते

हुए ऋजुवालिक नदी के तट पर गोधो आसन में केवलज्ञान की प्राप्ती हुई, 72 वर्ष की आयु में सर्व कर्म क्षय कर बेले तप के साथ नौ लच्छी और नौ मल्ली राजे-महाराजों को उत्तराध्ययन का वाचना देते हुए दिवाली की रात परिनिर्वाण मोक्ष प्राप्त कर सिद्ध-बुद्ध हो गये।

बारह चक्रवर्ती

1 **भरत चक्रवर्ती**

भगवान ऋषभदेव के पुत्र बड़े धर्मात्मा थे। एक समय में ही तीन समाचार एकसाथ मिले, भगवान ऋषभदेव को केवल्य प्राप्त, आयुधशाला में सदर्शन चक्र का प्रकट होना और पुत्र रत्न की प्राप्ती। बड़े भाई बाहूबली के साथ मुष्टी प्रहार हुआ, देवताओं ने बाहूबली का हाथ रोक लिया, बाहूबली दीक्षा लेकर ध्यानस्थ हो गया। भरत भी पुत्र को राज्.भार सौंप कर दीक्षित हुए और मोक्ष प्राप्त किया।

2 **सागर**

यह भगवान अजित नाथ जी के समय हुए.। इनके 60000 पुत्र थे। पुत्रों को कठिन काम देते हुए कैलाश पर्वत के चारों ओर खाई खोदकर गंगा नदी बहाने की आज्ञा दी। देवमाया ने सारे पुत्रो को अचेत कर, राजा को उनके मरने का समाचार दिया, यह सुनकर सगर को वैराग्य हो गया और संयम धारण कर लिया और मोक्ष पधार गये।

3 **मघवा**

यह भगवान श्री धर्मनाथ जी के मोक्ष होने के कुछ समय पश्चात अयोध्या में राजा सुमित्र के घर जन्म लिया, बहुतकाल तक राज्य किया अन्त में संयम लेकर तप अराधना करते मोक्ष पदारे।

4 **सनत्कुमार**

अयोध्या में ही राजा अनन्तवीर्य की रानी सहदेवी के रुपवान न्यायी पुत्र थे।

5 शांती नाथ

आप 16 वें तीर्थंकर हुए हैं।

6 कुन्थुनाथ जी

आप 17 वें तीर्थंकर हुए हैं।

7 अरहनाथ जी

आप 18 वें तीर्थंकर हुए हैं।

8 सम्भूम

18 वें तीर्थंकर निर्वाण के पश्चात और 19वें तीर्थंकर से पूर्व सूँभम नाम के चक्रवर्ती हुए सातवा खण्ड साधन के परियाय से समुद्र में डूबकर मृत्यु हुई और सातवें नरक में गये।

9 महापद्म चक्री

9वें चक्रवर्ती महापद्म हस्तिनापुर नरेश पद्मोत्तर की रानी ज्वाला के गर्भ से हुए। अन्त मे दीक्षा धारण कर मोक्ष पधारे।

10 हरिषेण

21 वें तीर्थंकर के समय ही कम्पिल नगरी के महाहरी राजा की रानी मेरादेवी ने हरिषेण को जन्म दिया । वह भी दीक्षा लेकर मोक्ष पधारे।

11 जयसेन

राजगृह नगरी में विजय राजा का रानी वप्रावती के जयसेन राजकुमार हुए और वह 11 वें चक्रवर्ती हुए, राज्य को त्याग कर दीक्षा ग्रहण कर मोक्ष पधारे।

12 ब्रह्म दत्त (सातवें नरक में)

श्री अरिष्टनेमि जी के पश्चात और श्री पार्श्वनाथ जी के पहले अन्तर में चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त हुआ। यह ब्रह्म राजा और रानी चूलदेवी का पुत्र था। बह विषय-विकारों में फंसा रहा और मर कर सातवें नरक में गया।

कर्मावतार, अर्ध चक्री,, नारायण(बलदेव), वासुदेव पद प्राप्त करने वाले सात रत्नो को प्राप्त करते हैं। जो इस प्रकार है-

1 सुद्रशन चक्र
2 अमोघ शंख
3 कौमुदी गद्धा
4 पुष्पमाला
5 धनुष्य अमोघ बाण
6 कौस्तुभमणि 7 महारथ

यह महाबलवान और सुन्दर होते है, इनकी ऋद्धि-सिद्धि चक्रवर्ती से आधी होती है। बलदेव और वासुदेव भाई होते हैं एक ही पिता की सन्तान परन्तु माताएं अलग-अलग होती है। इनका आपस का प्रेम-प्यार अथाह होता है।

नौ बलदेव

1 **अचल बलदेव-** रिपुप्रतिशत्रु नामक नरेश की अग्रमहिषी नामक पत्नी जब सो रही थी उस समय सुबल मुनि का जीव अनत्तर विमान से च्यव कर रानी की कुक्षी में आया, महारानी ने चार महास्वप्न देखे- हस्ति, वृषभ, चन्द्र और पूर्ण सरोवर, जिससे शक्तिशानी, अति सुन्दर और पराक्रमी बालक का जन्म हुआ और नाम दिया अचल।

2 **विजय-** सौराष्ट्र की प्रसिद्ध नगरी द्वारिका ब्ह्म राजाधिपति था उसकी सुभद्रा और उमा नाम की दो पटरानियाँ थी। पवनवेग नाम का जीव अनुत्तर विमान से चलकर महारानी की कुक्षी में आया और चार स्वप्न देखे और पुत्र रत्न पैदा हुआ जिसका नाम विजय रखा ।

3 **भद्र-** द्वारिका नगरी में रूद्र नाम का राजा था उसकी दो रानियाँ- सुप्रभा और पृथ्वी नाम की थी। नन्दीसुमित्र का जीव अनुत्तर विमान से च्यव कर सुप्रभादेवी की कुक्षी में आया, माता ने बलदेव पद सूचित

करने वाले स्वप्न देखे और नाम भद्र रखा गया। वह महा बलवान योद्धा हुआ।

4 **सुप्रभ-** द्वारिका नगरी में सोम नाम का गुणवान राजा था। सुदर्शना और सीता नाम की दो रानियाँ थी। महाबल नाम का मुनि सहस्त्रार देवलोक से च्यव कर सुदर्शना रानी की कुक्षी में आया और जन्म होने पर नाम सुप्रभ नाम दिया, वह कला में प्रवीण और बलशानी था। भगवान अनन्तनाथ के समय चौथा बलदेव हुआ।

5 **सुदर्शन-** भरतखंड के अश्वपुर नगर में शिव नाम का राजा राज करता था, विजया और अम्बिका नाम की दो रानियाँ थी। पुरुषवृषभ मुनि का जीव सहस्त्रार देवलोक में आयुपूर्ण कर विजया महारानी की कुक्षी में आया और समय पूर्ण कर सुदर्शन नाम का बलदेव अति पराक्रमी, बलशाली भाई विजया वासुदेव से अथाह प्रेम था। यह भगवान धर्मनाथ के समय हुए।

6 **अनन्द-** भगवान शान्ती नाथ के समय जम्बूद्वीप में शुभा नाम की नगरी में स्तिमितसागर नाम के राजा की दो महारानियाँ वसुन्दरा और अनुद्धरा सुन्द और सुशील थी। अमिततेज का जीव देवलोक से चलकर महारानी वसुन्दरा की कुक्षी में आया, महारानी ने चार महास्वप्न देखे और समय पूर्ण होने पर बालक को जन्म दिया नाम रखा आनन्द।

7 **नन्दन-**भगवान श्री अरहनाथ के समय राजा अग्निसिंह की रानी जयंती से नन्दन नामक सातवे बलदेव और दुसरी रानी शीलवी के गर्भ से दत्त नामक वसुदेव उत्पन्न हुए।

8 **रामचन्द्र** -महा पद्म चक्रवर्ती के कुछ ही काल पश्चात अयोध्या के महाराज दशरथ की महारानी अपराजिता (कौशल्या) से आठवें बलदेव श्री रामचन्द्र जी हुए, यह भी मोक्ष में विराजे।

9 **बलभ्रद जी-**यह कृष्ण जी के भाई वसुदेव के पुत्र थे, अभी यह देवलोक में है, भवभ्रमण करते मोक्ष पधारेंगें।

नौ वासुदेव

1 **त्रिपृष्ट-** विश्व भूति नाम का जीव, महाशुक्र देवलोक से च्यव कर मृगावती की कुक्षी से जन्म लिया। माता ने सात स्वप्न देखे- केसरी सिंह, लक्ष्मीदेवी, सूर्य,,कुँभ, समुद्र, रत्नों का ढेर और निर्धूम अग्नि, जिसका ज्योतिषीयों ने कहा- आने वाला वालक वसुदेव होगा। बालक की पीठ पर तीन बाँस के चिन्ह थे जिससे नामकरण त्रिपृष्ट रखा गया। त्रिपृष्ट की 32000 रानियों के साथ भोग किया। वह क्रूर होकर अपने शेय्यापालक के कान में गर्म रांगा भरवाया, जिससे वह वेदना भोगता हुआ काल कर गया। कईं भवों के वाद वह शेय्यापालक ग्वाला बना और त्रिपृट भव भ्रमण करता हुआ चौबीसवां तीर्थंकर भगवान महावीर हुए। यह घटना भगवान श्रेयांस देव के समय की है।

2 **द्विपृष्ट-** सौराष्ट्र की प्रसिद्ध नगरी द्वारिका ब्ह्म राजाधिपति था उसकी सुभद्रा और उमा नाम की दो पटरानियाँ थी। पवनवेग नाम का जीव अनुत्तर विमान से चलकर महारानी की कुक्षी में आया और चार स्वप्न देखे और पुत्र रत्न पैदा हुआ जिसका नाम विजय रखा । कालन्तर में रानी ने सात स्वप्न देखे और पुत्र का नाम द्विपृष्ट रखा । वे वीर योद्धा सभी कलाओं में निपुण और दोनों राजकुमार महाबली थे। तारक महाराज के साथ युद्ध में उसे मार गिराय और उसका राज्य लेकर अर्धचक्री हुआ।

3 **स्वयंभू-** धनमित्र का जीव अच्युत स्वर्ग से च्यव कर पृथ्वि की कुक्षी में आया, सात स्वप्न देख वासुदेव पुत्र को जन्म दिया और नाम दिया स्वयंभू, भाई भद्र के साथ अत्यन्त स्वेह था और सब कलाओं मे प्रवीण था। महाराज मेरक की कषायाग्नि प्रज्जवलित हो गई और सेना लेकर द्वारिका की ओर चल दिया। बयंकर नरसंहार मचा। मेरक मारा गया, मेरक के

राज्य के स्वामी बन तीसरे वासुदेव हुए। यह घटना भगवान विमल नाथ के समय की है।

4 **पुरोषोत्तम-**द्वारिका नगरी में सोम नाम का गुणवान राजा था। सुदर्शना और सीता नाम की दो रानियाँ थी। समुद्रदत्त नाम का जीव सहस्त्रार देवलोक से च्यव कर सीता रानी की कुक्षी में आया और जन्म होने पर नाम पुरोषोत्तम, बड़ा होकर युद्ध विद्या में कुशल बलशाली देवों ने सारंग धनुष आदि प्रभावशाली अयुद्ध भेंट किये और यह भगवान अनन्तनाथ के समय तीसरा वासुदेव हुए।

5 **पुरुषसिंह-** भरतखंड के अश्वपुर नगर में शिव नाम का राजा राज करता था, विजया और अम्बिका नाम की दो रानियाँ थी। विकट का जीव दूसरे देवलोक में आयुपूर्ण कर अम्बिका महारानी में आया और समय पूर्ण कर निशुम्भ से नाम का चौथा प्रतिवासुदेव अति पराक्रमी, बलशाली भाई सुदर्शन बलदेव से अथाह प्रेम था। यह भगवीन धर्मनाथ के समय हुए।

6 **पुण्डरीक-** भगवान शान्ती नाथ के समय जम्बूद्वीप में शुभा नाम की नगरी में स्तिमितसागर नाम के राजा की दो महारानियाँ वसुन्दरा और अनुद्धरा सुन्द और सुशील थी। विजय का जीव देवलोक से चलकर महारानी अनुद्धरा की कुक्षी में आया, महारानी ने सात महास्वप्न देखे और समय पूर्ण होने पर बालक को जन्म दिया नाम रखा पुण्डरीक पाँचवा वासुदेव हुआ।।

7 **दत्त-** भगवान श्री अरहनाथ के समय दत्त नाम का सातवाँ वासुदेव हुए। अग्निसिंह की रानी शेषवती के गर्भ ललितनाम का जीव आने से पूर्व सात स्वप्न देखे तो पुत्र का नाम दत्त रखा जो महापराक्रमी योद्धा था। प्रति वासुदेव प्रह्लाद से युद्ध कर उसी के चक्र से उसका वध कर उसके समस्त राज्य पर अधिकार कर वासुदेव बने।

8 **लक्ष्मण-** भगवान राम का भाई, लंका में रावण का वध कर वासुदेव बने। यह घटना भगवान मुनि सुव्रत स्वामी बीसवें तीर्थंकर के समय की है।

9 **कृष्ण-** जरासंध को मार कर नवमें वासुदेव बनें, महाभारत के युद्ध में अर्जुन को उपदेश के रुप में विश्व को गीता का ज्ञान दिया। यह घटना बाईसवें तीर्थंकर भगवान अरिष्टनेमी के समय की है।

नौ प्रति वासुदेव

1 **अश्वग्रीव-** अश्वग्रीव दक्षिण भारत का स्वामी था, बलशाली था, उसके राज्य को कोई चुनौती देने वाला नहीं था। भविष्य में कोई वीर पैदा हो सकता है। भविष्यवेता ने कहा-राजन् ! जो व्यक्ति आपके चण्डवेग नाम के दूत का पराभव करेगा और पश्चिमी सीमान्त में वन रहे वाले सिंह का संहार करेगा, वही आपके लिए घातक होगा। अचल और त्रिपृष्ट को मार गिराया।

पोतानपुर में हलचल मच गई। युद्ध की तैयारियाँ शुरु हो गई, विद्याधरो के राजा ज्वलनजटी ने अचलकुमार और त्रिपृष्ट से कहा- आप महावीर हो अश्वग्रीव आपके सामने पराजित होगा। त्रिपृष्ट नें प्रलकारी पांचजन्य शंख का नाद किया जिससे शत्रु सेना उखड़ गई, उसके सभी अस्त्र निष्फल हो गये और मारा गया।

2 **तारक-** भगवान वासपूज्य के समय द्वारिदाधीश महाराज तारक के अधीन था। द्विपृष्ट के चक्र से उसकी मृत्यु हुई और नरक गामी हुआ।

3 **मेरक-** महाराज मेरक की कषायाग्नि प्रज्जवलित हो गई और सेना लेकर द्वारिका की ओर चल दिया। बयंकर नरसंहार मचा। मेरक मारा गया, मेरक के राज्य के स्वामी बन तीसरे वासुदेव हुए। यह घटना भगवान विमल नाथ के समय की है।

4 **मधुकेटक-** चंडशासन भी मृत्यु पा कर भव-भ्रमण करता हुआ और भीषण दुःख भोगता हुआ पृथ्वीपुर के राजा विलाव की महारानी गुणवती की कुक्षी मे उत्पन्न हुआ, उसका नाम मधु रखा गया। वह अद्वितीय महाबली योद्धा था । अपने बहुबल से दक्षिण राज्यों पर विजय पाकर भगवान अनन्तनाथ के समय वासुदेव पुरुषोत्तम के हाथों युद्ध में मारा गया।

5 **निशुम्भ-** विकट का जीव दूसरे देवलोक में आयुपूर्ण कर अम्बिका महारानी में आया और समय पूर्ण कर निशुम्भ से नाम का पांचवां प्रतिवासुदेव अति पराक्रमी, बलशाली । यह भगवान धर्मनाथ के समय हुए।

6 **बलि-** प्रियमित्र की रानी का हरण करने वाला राजा सुकेतु भवभ्रमण करता हुआ मेघनाद के वंशज में बलि नाम का प्रतिवासुदेव हुआ। वह तीन खण्ड पृख्वी का अधिपति था, राजकुमार आनन्द और पुरुषपुण्डरीक के साथ युद्ध में मारा गया और पुण्डरीक वासुदेव हुए।

7 **प्रहलाद-**भगवान श्री अरहनाथ के समय सातवां वासुदेव, नन्दन बलदेव और प्रह्लाद प्रति वासुदेव हुए। ललितमित्र नाम का जीव घोषमुनि के पास दीक्षित होकर घोर तपस्या करने से निदान कर लिया कि अगामी भव में मैं दुष्ट खल मन्त्री का वध करूँ। खल मन्त्री चिरकाल तक भव भ्रमण करता वाताढ्य पर्वत के उत्तर श्रेणी के तिलकपुर नगरी के अधिपति प्रति वासुदेव प्रह्लाद हुए ।

8 **रावण-** लंका का अधिपति सीता हरण के कारण राम के साथ युद्ध में लक्ष्मण के हाथों मारा गया।

9 **जरासंध-** कृष्ण के मामा कंस का ससुर, जीवयशा का पिता था। कंस के मारे जाने पर, जीवयशा के दुःख को देखकर कृष्म से भयंकर युद्ध

किया, यादवों पर भारी पड़ रहा था कि अरिष्टनेमि ने अपने पांचजन्य संख की ध्वनि से उसकी सेना भयबीत होकर बिखर गई और कृष्ण के हाथों मारा गया।

तजना अच्छा गुणहीन देव, खोटा जाप न जपना चाहिए,
जिसमें न जौहर हो वह अस्त्र तजो,अन्यायी भूप तजना चाहिए,
दुराचारणी नार तजो, वह मित्र तजो जो छल करता।
उस दुष्ट का मुख न देखो, जो नार सताए पतिव्रता ।।

दया और हिंसा

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब तक घट में प्राण।।

अत्याचार का विरोध दया है और अत्याचार हिंसा है। विश्व के किसी भी धर्म ग्रन्थ में हिंसा का वर्णन नहीं मिलता, सब मानवता को ही परम धर्म मानते हैं। परन्तु कुछ धर्म के ठेकेदार, जिन्हें वास्तव में धर्म का ज्ञान नहीं होता, अपने बाहूबल या दादागिरी से अपने ही कानून धर्म में बना लेते हैं और जनता को गुमराह करना असान होता है। छलिये कोई अपने आप को श्री कृष्ण का अवतार मानते हैं, कोई गोपियों का कान्हाँ कहता है, कोई अन्य धर्म गुरुओं के भेजे हुए अपने को दूत कहते है। कुछ कहते है हमारा धर्म है काटना, यदि आत्मा अमर है, वह मरती नहीं तो पाप कैसा ? जब प्रकृति ने जीव को कोई शरीर दिया है तो उसका आयु बन्ध भी किया है, यदि उसको अकाल मृत्यु दी जाती है, तो प्रकृति का उलघंन करते है, जो हिंसा है। हिंसा है तो पाप है। बड़े-बड़े ऋषि-

मुनि और ज्ञानी पुरुष भी कभी कभार क्रोध के वश अनर्थ करने पर उतारू हो जाते हैं।

महाभारत का युद्ध चल रहा है, कौरवों और पाण्डवों में भीषण संहार हो रहा है। कर्ण पाण्डवों की सेना का मलियामेट कर रहा है कि धर्मराज युधिष्ठर कर्ण के सामने आ जाते हैं, कर्ण युधिष्ठर को घायल कर देता है और युधिष्ठर अपना रथ निकाल कर अपने शिविर को चला जाता है कि भीम देख रहा होता है और कर्ण के सामने आ डटा। भीषण युद्ध चल रहा होता है अर्जुन त्रिगर्तति से वीरता पूर्वक युद्ध कर रहे थे, उन्हें देखकर कर्ण ने पाण्डव सेना पर भयंकर युद्ध छेड़ दिया। अर्जुन ने त्रिगर्तति सुशमा को मार गिराया और दुर्योधन के छः भाई भी मारे गये, तब अर्जुन ने भीम को युद्ध करते देखा तो भीम की तरफ आ गया देखा धर्मराज नहीं है, भीम से पूछा- भीम ने युद्ध करते हुए कहा कि धर्मराज घायल होकर शिविर में चले गये हैं। अर्जुन ने अपना रथ धर्मराज के शिविर की ओर कर लिया और शिविर मे पहुँच गये, धर्मराज ने समझा कि कर्ण को मार कर सूचना देने आये हैं। धर्मराज- कर्ण मारा गया, अर्जुन नहीं। धर्मराज उतेजित हो गया और अर्जुन को कुछ भला-बुरा कह दिया, लानत है तेरे गाण्डिव पर, अर्जुन ने शपथ ले रखी थी कि जो मेरे गाण्डिव को कुछ कहेगा, मैं उसका सिर कलम कर दूँगा। अर्जुन हड़बड़ाकर तलवार म्यान से निकाल कर धर्मराज पर प्रहार करने लगा कि श्री कृष्ण ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहने लगे-क्यों बुद्धहीन हो गया है, धर्मराज को मार कर तूँ जिन्दा रह सकेगा। अर्जुन- केशव मैंने कसम खाई हुई है, कि मैं अपने गाण्डिव के विरुद्ध कुछ सहन नहीं कर सकता, यह मेरा क्षत्रिय धर्म है। क्या करूँ मेरी बुद्धि नीच हो गई थी, अब मुझे अपनी गल्ती पर जिन्दा रहने का कोई अधिकार नहीं, मुझे अपना ही वध करना होगा, यह कह कर तलवार से अपने गले पर वार करने लगा कि श्री कृष्ण ने फिर हाथ पकड़ कर रोक दिया, किसी महान पुरुष को कुछ अभद्र कहना ही हत्या है, तब अर्जुन कृष्ण के पाँव पड़ गया, तुमने अनर्थ होने से बचा लिया।

इससे धर्मराज युधिष्ठर बहुत प्रसन्न हुए, अर्जुन –तुम्हारा विचार अनुकूल था, मैं अपनी गर्दन करता हूँ, अपना क्षत्रिय धर्म निभाओ, महाराज श्री कृष्ण ने दोनों को गले लगा कर शांत किया और हिंसा को दया में परवर्तित कर दिया। महापुरुषों की संगत से हिंसा समाप्त हो जाती है और दया धर्म का उदय होता है। जैन दर्शन तो हिंसा को और भी सूक्ष्म देखता है, यदि कोई हिंसा करता है, या करवाता है एवं करने वाले का गुणगान करता है तो भी हिंसा होती है। हिंसा को रोकना ही, दया है।

पराई पीड़ में पड़कर के पीड़ बनाता है,
जीवन में सुख हो ऐसा चिन्तन चलाता है
ऐसी सद्भावना सद्गुण जहाँ महके
वही आदमी है, जो देवता हो जाता है ।।

धर्म सम्प्रदाय और मान्यताएं

धर्म क्या है ? मन की मालीनता को दूर करना ही धर्म है। **धम्मो सुद्धस्स चिट्ठाउ** अर्थात् धर्म शुद्धता में है। हम प्रातः सामायिक, मन्दिर में पूजा- अर्चना कर तिलक लगाना, घंटे बजाना या मस्जिद में जा कर आजान अल्लाह हू अकबर पुकारना धर्म कि क्रियाएं हो सकती है परन्तु जब तक इन क्रियाओं को चौबीस घंटे पालन नहीं करते, एक घंटे के पश्चात 23 घंटे राग-द्वेष, संसारी झंझटों मे उलझे रहना धर्म नहीं हो सकता। सदैव बूरे कामों से बचना, यदि कोई बूरा काम हो भी जाए तो उसका प्रायश्चित कर मन को शुद्ध करना ही दर्म है।

सामाजिक और जातिय मान्यताएं को एक ओर छोड़ दे और धार्मिक मान्यताओं की बात करें तो ईश्वर , खुदा-अल्लाह और देवी देवताओं के नाम पर हिंसा जो हो रही है, क्या यह कैसा धर्म एवं मानयता ? महादेव शिव जी शिवत्व मंगल-कल्याण का पौराणिक देव हैं. नेपाल में उन की मूर्ति के समक्ष बकरे और भैंस निर्दयता के साथ मौत के घाट उतारे जाते है। जगद-दात्री कहाने

वाली माँ-दूर्गा या काली आदि देवियों की पूजा के नाम पशुबली एवं शराब का भोग, उज्जैयन में महाकाल मन्दिर में शराब का भोग, यह कैसी मान्यता है या कर्मबन्ध ? हमारे अपने जैन समाज में भी मान्यताओं ने भ्रमजाल में उलझा रखा है, दिगम्बर और श्वेताम्बर लगभग छबीस सौ वर्ष के पश्चात भी वस्त्र का फैसला नहीं कर सके। दिगम्बर एक तार भर वस्त्र के रहने पर साधुत्व नहीं मानते और स्त्री को भी साधुत्व से वंचित रखा जाता है, स्त्री को मोक्ष नहीं जा सकती। अर्हन्त प्रभु की प्रतिमाओं पर नग्नता और अनग्नता के नाम पर भयंकर मारा मारी है। बीसपंथी, तेरापंथी आदि दिगम्बर समाज में भी अनेक भेद-प्रभेद हैं कौन कैसे पूजा करे, प्रश्न सुलझ नहीं रहा, एक ही क्षेत्र में अलग-अलग पूजा पाठ का विधान है। यह सब हमारे धर्म गुरुओं के माध्यम से ही होता है। श्वेताम्बर परम्परा में भी कुछ कम नहीं खरतरगच्छ और तपागच्छ में कोई कम भेद नहीं, पर्युषण पर्व के महीने का द्वन्द, कल्याणकों का झगड़ा और भी कई छोटे-मोटे मत-भेद है। स्थानकवासी समाज में भी धोवन का पानी, आजकल बरतन वाशिंग पाउढर से और दाले धुली-धुलाई आती है। रसोई में गैस का प्रयोग होता है, राख मिलती नहीं। पोचे का पानी, जिसमें फिनायल होती है, कई सन्त उसे स्वीकार करते हैं, दो वक्त (सुबह-शाम) प्रतिक्रमण करते हुए चौरासी लाख जीव योनियों से क्षमा-याचना करते है परन्तु अपने ही परिवार के सन्तों से मतभेद एवं मनभेद होने के कारण वन्दना व्यवहार भी छूट जाता है, यह कैसा ज्ञान है या अहंकार है। प्रवचन सभाओं मे कुछ श्रावकों में परिवारिक भ्रान्तियों से मतभेद हो जाते है, भाई-भाई में बोलचल बन्द हो जाती है, उनके मत-भेद समाप्त करवा कर समझौते करवाते हैं, जो अच्छी बात है पर अपने मत-भेद क्यों नहीं छोड़ते। आज सन्त समाज श्रावक नहीं बनाती, केवल अपने भक्त ही बनाती है और अपनी धर्म गुरुधारणा करवाते है, अन्य को गुरु नहीं मानना, यह कैसी धर्म प्रभावना है या विष-वमन ? धर्म तो कृत्तव्य निष्ठा है, साधु का धर्म तो है सन्मार्ग पर लाना, साधु वह जो सत्य पर अडिग रहे। सम्प्रदाय तो बाड़े-बन्दी है, जो द्वेष का कारण होती हैं . श्रमण भगवान महावीर कहते है, मैं तुम्हारा कल्याण नहीं कर सकता, हां तुम्हें मार्ग बतला सकता हूँ, रास्ता तुम ने स्वयं पार करना है।

भगवान पार्श्वनाथ और भगवान महावीर की मान्यताओं मे अन्तर था और वह समय केवल 250 वर्ष था, अब महावीर को लगभग 2600 वर्ष हो चुके है, द्रव्य, क्षेत्र और काल की समय अनुसार परिवर्तन समय की माँग होती है, जिसे

स्वीकार करना कोई अपराध नहीं, जिससे परम्परों को छोड़ वीतरागता की ओर बढ़ना चाहिए

धर्म वह जो,अंर्तचेतना को मिला दे,
धर्म वह जो बिछुड़ों को मिला दे
धर्म की सीधी सी पहिचान यह है कि जो
शैतान को इन्सान और इन्सान को भगवान बना दे।।

सामाजिक एवं राजनीतिक विचारधारा

हिन्दु कौन ?

समस्त भारत में हिन्दु नाम की कोई जाति या धर्म नहीं है सनातन धर्म को विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा हिन्दु कहा जाने लगा, हिन्दु फारसी का शब्द होने के नाते इसका अर्थ है दास जो उन्होंने आर्य (श्रेष्ठ) भारतीयों के लिए प्रयोग किया। भारत में रहने वाले भारतीय, ईन्डिया में रहने वाले इन्डियन और हिन्दोस्तान (दासों का देश) में रहने वाले हिन्दु हो गये, यह एक पहिचान है, इसमें सभी समुदाय आ जाते हैं। फिर हिन्दु नाम राजनीतिक हौवा क्यों है? भारत में मूल रुप क्या था? कोई जाति या धर्म नहीं था केवल था एक मानव। जब किसी का जन्म होता है तो सब का एक समान शरीर होता है कोई जात-पात या सम्प्रदाय नहीं होता । कुलकर (मनु महाराज) श्री नाभि जी ने कार्य अनुसार चार धाराएं बनाई- जो ज्ञान अर्जित करे वह ब्राह्मण, जो देश,समाज,

परिवार की रक्षा करे वह क्षत्रिय, जो पालन-पोषण के लिए व्यवसाय करे वह वैश्य और जो अन्य काम करे वह शुद्र, यह सब काम के अनुसार था न कि जन्म के अनुसार। जब मानव में महत्वाकांक्षा बढ़ने लगी तो बाड़ा-बन्दी जात-पात हो गई। जिससे राग-द्वेष, राजनीति और बाहूबल से अपना-अपना सम्राज्य का अहंकार छाने लगा । ऐसा ही पूरे विश्व में हुआ, फिर लूट-खसूट से एक-दूसरे पर आक्रमण होने लगे ।

सबसे बड़ा सब का धर्म है मानवता, जिसे सब भूल जाते हैं और सब अपनी-अपनी डफली बजाने लग जाते हैं । आज ध्रर्म शब्द एक क्लेश का नाम हो गया है, जहां देखो धर्म के नाम पर युद्ध, झगड़े हो रहे हैं । जिस देश, समाज की शान्ति भंग करनी हो तो धर्म के नाम का झंड़ा गाड दो, समस्त जनता मूर्ख बन कर कुछ महत्वाकाक्षियों का खिलौना बन कर मरण-मारण को तैयार हो जाएगी । जब से भारत स्वतन्त्र हुआ भारत का संविधान लिखा गया जिसमें हर पहलु पर विशेष ध्यान दिया गया और भारत को निरपेक्ष बनाने का प्रयास किया गया परन्तु धर्म निरपेक्ष क्यों ? धर्म तो सब का मानवता है यह सम्प्रदाय निरपेक्ष होना चाहिए था । प्रत्येक भारतीय को अपनी अपनी सम्प्रदाय के अनुसार अपनी मान्यता का निजी अधिकार हो और है । विचार-धारा से जिसे कोई अच्छा लगे वह उसका पालन कर सकता है । तो किसी प्रकार के झगड़े का काम ही नहीं रह जाता । परन्तु दुःख की बात है कि हमारे राजनीतिज्ञ इतने कुशल नहीं कि वह अपना वर्चस्व जनता पर बना सके, चुनाव के समय वह धर्म के नाम पर जनता को गुमराह करने लगे जिससे उनकी लीडरी कामयाब हो सके । कुछ दलित शब्द का प्रयोग कर अपनी-अपनी पैंठ बढ़ाने लगे, जो करोड़ो-अरबो धन के मालिक बन बैठे और दलितों के मसीहा कहलाने लगे, वह दलित कैसे ? महात्मा गांधी ने पिछड़े वर्ग (किसी अन्याय के कारण) के लिए शब्द दिया था हरिजन, जिसका भाव था परमात्मा के सदस्य, जिनको न्याय देकर भारत का सामान्य नागरिक बनाया जा सके जिसकी संविधान में रैजोरवेशन का प्रावधान दिया गया । दुःख

की बात है कि सत्तर सालों में भी उनका उत्थान न हो सका और वोटबैंक के लिए दलित और दस साल के लिए रैजोरवेशन बढ़ा दिया । क्या बहन मायावती, श्रीमति मीरा कुमार, मन्त्री पासवान अभी दलित ही रहेगें । संविधान तो कहता है कि प्रत्येक भारतीय समृद्ध हो कर एक सामान्य हों ।

हमारी वर्तमान केन्द्रिय सरकार ने तीन तलाक कानून पास कर दुःखयारी महिलों के उत्थान के लिए रास्ता प्रज्वलित कर सम्प्रदायिक कुरीतियों को दूर करने का अच्छा प्रयास किया, धारा 370 को हटाकर कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाया यह भी अच्छा काम किया परन्तु जो नागरिक संशोधन कानून बनाया उसकी क्या आवश्यकता पड़ी, जब कि नियमानुसार नागरिकता दी जाती है यह हर देश के नियम होते हैं हमारे भारतवासी लगभग एक करोड़ 80 लाख विदेशों में रह रहे हैं और उनके नियमानुसार वह पी,आर (परमानैन्ट रैजीडैंट) ग्रहण करते हैं ऐसी व्यवस्था भारत के संविधान में भी है, जो अनुचित ढ़ंग से भारत में रह रहा है उसे डीपोर्ट करने का भी व्यवधान है तो यह कानून क्यों ? कानून की भाषा भी अपतिजनक है- जिसमें हिन्दु, सिख, बौद्ध, जैन, ईसाई वर्ग का नाम लिया गया यदि इसकी जगह भारतीय मूल के निवासी लिखा जाता तो शायद किसी को अपत्ति नहीं होती । जबकि राष्ट्रीय सेवक संघ के प्रमुख कहते हैं कि भारत में एक अरब 30 करोड़ हिन्दु है, फिर तो मुस्लिम वर्ग भी हिन्दु हो गया तो अन्य वर्ग का नाम नागरिक संशोधन कानून में क्यों, क्या इन पांच वर्गों की मान्यता एक प्रकार की है? हिन्दु शब्द के अन्तर्गत सनातन और वैदिक सम्प्रदाय आती है जो वेद, यज्ञ और ब्रह्मा, विष्णु, महेश को अवतार मानती हैं , सिख अपने दस गुरुमहाराजों एवं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की मान्यता को स्वीकार करते हैं जैन सब का सम्मान तो करते हैं परन्तु वह अपने 24 तीर्थंकरो के साथ अपने ही अलग रीतिरिवाज को मानते हैं, बौद्ध सम्प्रदाय की अपनी अलग ही पहिचान है वह महात्मा बुद्ध को ही भगवान मानती है और इसाई सम्प्रदाय ईसा-मसीह को ही गॉड मानते है और बाईबल उनका पवित्र

ग्रन्थ है फिर सारे हिन्दु कैसे? यह तो आग में घी डालने के इलावा और कुछ नहीं ।

लगभग आठ-दस शताब्दियों से भारत में इस्लाम सम्प्रदाय का प्रवेश हुआ जिसमें भारत की समस्त जातियों पर प्रहार कर उनको प्रवर्तित किया गया और अब कट्टरता का जाम पिलाया जा रहा है जिससे क्षुब्ध हो कर वह इस कानून का विरोध कर रहे हैं। भारत के संविधान में उनको सामान्य अधिकार दिये हैं यहां तक कि भारत को सर्वोच्य पद राष्ट्रपति पर भी इस सम्प्रदाय के माननीय सदस्य सुशोभित कर चुके हैं, कोई किसी किस्म का भेदभाव नहीं, हमारे देश के रक्षक सेना में भी वह देश के लिए प्राण न्योछावर करते हैं, सेना में कोई जातपात का प्रश्न नहीं वह सब भारतीय हैं । हमारी खेलों में भी वह देश के नागरिक की भूमिका निभाते देश के लिए खेलते हैं। विरोध करने का शांतीपूर्वक अधिकार हर भारतीय को है, जब समूह में कोई विरोध हो तो सरकार को हठी न हो कर उसका समाधान निकालना चाहिए । जब भारत में विदेशी राज्य करते थे तो किसी कानून का विरोध होता था तो वह भी समाधान के लिए झुकते थे । हमारी विश्वविद्यालयों में क्या हो रहा है एक वर्ग के कुछ अनैतिक जाकर गुंडागर्दी मचाते हैं, तो पुलिस भी निरपेक्ष नहीं रहती । जब किसी का विनाश करना हो तो धर्म का झंडा गॉड दो, ऐसा ही हो रहा है जो चिन्ता का कारण है । चाहिए तो था कि नारेन्द्र मोदी की जगह नारेन्द्र भारतीय और राहुल गांधी की जगह राहुल भारतीय । यह जाति सूचक मिटा देने चाहिए। तभी भारत विश्व विख्यात हो सके गा । इसका उदाहरण चीन हमारे सामने है वहाँ कोई धर्म सम्प्रदाय नही जिससे वह तेजी से आगे बढ़ रहा है । धर्म अधारित देश पाकिस्तान कंगाल हो रहा है अन्य धर्म अधारित देश युद्ध की ज्वालामुखी के द्वार पर बैठे हैं । हमें इस से बचना चाहिए और समृद्ध भारत की कामना करनी चाहिए ।

नशा पिला के गिराना तो सब को आता है ।

मजां तो तब है जो गिरतों का थाम ले साकी ।।
इतिहास से ऐसा ज्ञात होता है कि बौद्ध शासकों के पतन के बाद स्मृति काल में ही बुद्ध की जाति बदल कर क्षत्रिय की गई तथा उन्हें विष्णु का अवतार भी इसी काल में बनाया गया। यह प्राक्रिया बौद्धों का हिन्दुकरण कहलाती है पुस्तक अंश *-आधुनिक भारत में पिछड़ा वर्ग (पूर्वाग्रह मिथक एवं वास्तविकताएं) लेखक-संजीव खुदशाह*
ऐसे ही भगवान ऋषभदेव को विष्णु जी का आठवां अवतार माना है जिस से जैनधर्म को भी वैदिक संस्कृति में माना जाय है जबकि हर पुराण और चारों वेदों में भगवान ऋषभ देव का वर्णन आता है, जिससे सिद्ध होता है कि भगवान ऋषभदेव ही इस युग के निर्माता हैं। सब को हिन्दुकरण का प्रयास किया गया है। नागरिक संशोधन कानून की रुप रेखा भी ऐसा ही दुःखद प्रयोग है।
इतिहासकार कहते है कि आर्य विदेश से आकर बस गये और यहाँ के निवासी हो गये। आर्य भारत की मूल निवासी थे और हैं। आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ । यह भगवान ऋषभदेव के समय से जब महाराज भरत छः खण्ड पर राज्य करते थे जिसमे समस्त विश्व की धरती आ जाती है तो उस समय के ऋषि जो ऋषभ के ज्ञान धारक थे वह मन्त्र विद्या से सारे विश्व का भ्रमण और धर्म प्रचार करते थे, जहाँ धर्म का प्रभाव होता था वह आर्य कहलाता था और जहाँ अधर्म रहता था उसे अनार्य देश कहते थे। सनातन शब्द का अर्थ है प्रचीन। आर्य़ और सनातन भारतीय सभ्यता का ही नाम है।
भारतीय सभ्यता चाहे उसे श्रमण एवं वैष्णव सभ्यता कहो अति प्रचीन होने के कारण कई उतार-चढ़ाव से इतिहासकार अपने विचारों में प्रकट करते हैं।
हिंदू कोई धर्म नहीं है,ना ही किसी प्राचीन भारतीय पुस्तक में हिंदू नाम के किसी धर्म का उल्लेख आया है। बल्कि यह एक संस्कृति है जो एक सिंधुघाटी श्रेत्र में विकसित हुई है। चार प्रमुख धर्म जो हिंद क्षेत्र में उत्पन्न हुए वे सभी धर्म, अरबों द्वारा हिंदू (दास) धर्म कहकर बुलाये गए थे क्योंकि वे सिंधु(indus

valley)को हिंद कहकर बुलाते थे।१- जैन धर्म २- वैदिक (वेदों से)३- बोद्ध धर्म ४- सिक्ख धर्म(1699 सन् में) इन चारों धर्मों में मुख्य मान्यता हैं-1-कर्म सिद्धांत,2-पुनर्जन्म(अलग-अलग कर्मों के कारण जानवर(तिर्यंच), नरक, स्वर्ग, मानव इन चारों गति में आत्मा के अंनता जन्म-मरण के चक्र) 3- मोक्ष (सभी प्रकार की बुराइयों और कर्मों से शाश्वत आत्मा को शुद्ध करके सभी जन्मचक्रों से मुक्ति)इन चार धर्मों में से जैन धर्म और बौद्ध धर्म का मानना है कि यह ब्रह्मांड सभी जीवित प्राणियों के joint venture द्वारा बनाया गया है। कोई भी single निर्माता नहीं है, लेकिन सभी आत्माएं ही भीतर से भगवान हैं।(।।अहम् ब्रह्मास्मि।।) लेकिन इन दोनों धर्मों में से जैन धर्म के पास ज्ञान के विशिष्ट ग्रन्थो का एक विशाल खजाना है, जिसमें विद्वतापूर्वक वर्णन किया गया है कि आत्मा का अस्तित्व क्या है और यह प्रकृति का नियम दोनों कैसे एक साथ काम करते हैं। इसलिए अहिंसा ही इन दोनों धर्मों के अनुसार वास्तविक धर्म है। ये सभी धर्म भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) की शिक्षाओं से शुरू होते हैं जब उन्हें अपनी आत्मा का ब्रह्मज्ञान (कैवलज्ञान)प्राप्त हुआ था। भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) जैन धर्म के पहले तीर्थंकर (संस्थापक) हैं, भारतीय वैदिक 'ऋषि' शब्द भी उनके नाम 'ऋषभ' से आया है और इन ऋषभदेव की स्तवना वेदों में भी की गई है। और उन्हें 3 अलग-अलग देवताओं के रूप में माना जाता है- **ब्रह्मा-** (जब उन्हें आत्मा का ब्रह्मज्ञान मिला) **विष्णु-** (जब वे विश्व के पहले राजा बनकर प्रजा का पालन करते थे)**शिव**- (जब वे विश्व के पहले तपस्वी बने) ये सभी 3 अलग-अलग नहीं लेकिन एक ही महात्मा भगवान आदिनाथ थे। बौद्धधर्म में आदिबुद्ध के रूप में भगवान आदिनाथ की ही पूजा की जाती है।वही भगवान आदिनाथ को 4000 साल पहले अरब में उत्पन्न हुए यहुदी धर्म(jews)में पहले पैगंबर

आदिमबाबा/Adam के रूप में माना जाता है। लेकिन यहूदी धर्म में भगवान आदिनाथ के दोनो बेटे काबिल(भरत चक्रवर्ती) और हाबिल(बाहुबलि) की कहानी को एक काल्पनिक निर्माता के अस्तित्व को साबित करने के लिए दूसरे तरीके से बदल दी गई है। लेकिन हम जैनग्रंथों में वास्तविक कहानी पढ़ सकते हैं।

यहुदी धर्म के सभी उपदेश (commandments) जैन धर्म के मूलभूत सिद्धांतो से ही निकले हैं। यहुदी धर्म के founder इब्राहिम को पहाड़ों में साधना कर रहे एक जैन साधु ने ही आध्यात्मिक ज्ञान का उपदेश दिया था, ईसाई और मुस्लिम धर्म ने भी यहूदी धर्म की तरह तीर्थंकर आदिनाथ को ही पहलापैगंबर(prophet) आदिमबाबा/Adam माना है। विश्व

के सभी धर्मों का मूल उद्भव स्त्रोत्र एक ही "तीर्थंकर आदिनाथ" ही है ।यह महाभारतकाल के पश्चात की घटनाओं हैं। हिन्दुत्व का अर्थ क्या है, " सर्वे भवन्तु सुखिनः " अर्थात् "जीओ और जीने दो" यही भारत की सर्व श्रेष्ठ सभ्यता है। इसी लिए भारत कृषि एवं ऋषि प्रधान देश कहलाता है।

हिन्दूकुश पर्वतमाला की सचाई जानिए

हिन्दूकुश उत्तरी पाकिस्तान से मध्य अफगानिस्तान तक विस्तृत एक 800 किमी लंबी वाली पर्वत श्रृंखला है। यह पर्वतमाला हिमालय क्षेत्र के अंतर्गत आती है। दरअसल, हिन्दूकुश पर्वतमाला पामीर पर्वतों से जाकर जुड़ते हैं और

हिमालय की एक उपशाखा माने जाते हैं। पामीर का पठार, तिब्बत का पठार और भारत में मालवा का पठार धरती पर रहने लायक सबसे ऊंचे पठार माने जाते हैं। प्रारंभिक मनुष्य इसी पठार पर रहते थे।

हिन्दूकुश पर्वतमाला के बीचोबीच सबसे ऊंचा पहाड़ पाकिस्तान के खैबर-पख्तूनख्वा प्रांत के चित्राल जिले में स्थित है जिसे वर्तमान में तिरिच मीर पर्वत कहते हैं। हिन्दूकुश का दूसरा सबसे ऊंचा पहाड़ नोशक पर्वत और तीसरा इस्तोर-ओ-नल है।

उत्तरी पाकिस्तान में हिन्दूकुश पर्वतमाला और काराकोरम पर्वतमाला के बीच स्थित एक हिन्दू राज पर्वत श्रृंखला है। इस पर्वत श्रृंखला में कई ऋषि-मुनियों के आश्रम बने हुए थे, जहां भारत और हिन्दूकुश के उस पार से आने वाले जिज्ञासुओं, छात्रों आदि के लिए शिक्षा, दीक्षा और ध्यान की व्यवस्था थी। आज इस हिन्दू राज पर्वतमाला के प्रमुख पहाड़ों के नाम बदल दिए गए हैं, जैसे एक कोयो जुम नामक बहुत लंबा पहाड़ है। दूसरा बूनी जुम और तीसरा गमुबार जुम हैं। उल्लेखनीय है कि काराकोरम एक विशाल पर्वत श्रृंखला है जिसका विस्तार पाकिस्तान, भारत और चीन के क्रमश: गिलगित-बाल्तिस्तान, लद्दाख और शिन्जियांग क्षेत्रों तक है। काराकोरम, पूर्वोत्तर में तिब्बती पठार के किनारे और उत्तर में पामीर पर्वतों से घिरा है। हिन्दूकुश पर्वतमाला में ऐसे बहुत से दर्रे हैं जिसके उस पार कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान, चीन, रशिया, मंगोलिया, रशिया आदि जगह जा सकते हैं। यह हिमालय के उस पार से भारत में आने का आसान रास्ता है, जबकि तिब्बत के रास्ते सिक्किम होते हुए भारत आना थोड़ा कठिन है।

प्राचीन लोगों ने अपने कुछ प्रमुख मार्ग निर्मित किए थे जिसमें से एक है सिल्क रूट। सिल्क रूट के एक छोर से दूसरे छोर पर जाने वालों के लिए हिन्दूकुश

पर्वतमाला के विशेष क्षेत्रों में बने ऋषि- मुनियों के आश्रम जहां लोगों के लिए विश्राम स्थल थे वहीं यह दुनियाभर की जानकारी प्राप्त करने का क्षेत्र भी था। रोम के वेनिस, इसराइल के येरुशलम से तुर्की के इस्तांबुल तक और वहां से लेकर चीन के च्वानजो शहर तक यह रूट था। बीच में भारतीय क्षेत्र के शहर काबुल, पेशावर, श्रीनगर व्यापार के प्रमुख केंद्रों में से एक था। काबुल का पहले नाम कुम्भा था, जो वहां की एक नदी के नाम पर रखा गया था। यह क्षेत्र भारत के 16 जनपदों में से एक कंबोज के अंतर्गत आता था। पारास्य देश के तेहरान से एक रास्ता भारत की ओर तथा दूसरा रास्ता कैस्पियन सागर और तुर्कमेनिस्तान की ओर जाता है। पहले अफगानिस्तान भारत का ही हिस्सा हुआ करता था।

रोम से जियान तक : यह रोड तकरीबन 2000 साल पहले एशिया और यूरोप के बीच बिजनेस और कल्चरल एक्सचेंज का माध्यम था। यह मार्ग चीन के जियान शहर को रोम से जोड़ता था। दरअसल पुराने समय में चीन, भारत और पश्चिमी देशों के बीच रेशम का व्यापार हुआ करता था। जियान से रोम या रोम से जियान लोग दो रास्तों से जाते थे। इसमें एक रास्ता तो हिन्दूकुश के दर्रों से सीधे चीन जाने वाला रास्ता था तो दूसरा रास्ता भारत में होकर सिक्किम के नाथुला दर्रे से होकर चीन जाता था। हिन्दूकुश पर्वतमाला से लेकर नाथुला दर्रे तक बहुत सारे मठ मिल जाएंगे। तिब्बत और अफगानिस्तान उस दौर में धर्म का गढ़ बन गया था। हिन्दूकुश में दर्रों की भरमार है। यहां पहाड़ियों के बीच से कई सुगम और दुर्गम रास्ते हैं। इसलिए यह क्षेत्र पश्चिमी लोगों के लिए द्वार बन गया। हिन्दूकुश पर्वत 800 से ज्यादा किलोमीटर तक तो लंबाई में फैला है और 200 किलोमीटर से भी अधिक इसकी चौड़ाई है।

और भी कई उप मार्ग थे : उस समय रेशम मार्ग वर्तमान के अफगानिस्तान, उज्बेकिस्तान, ईरान और मिस्र के अलेक्जेंडर नगर तक पहुंचता था और इसका

एक दूसरा रास्ता पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के काबुल से होकर फारस की खाड़ी तक पहुंचता था, जो दक्षिण की दिशा में वर्तमान में कराची तक पहुंच जाता था और फिर समुद्री मार्ग से फारस की खाड़ी और रोम तक पहुंच जाता था।

लानझोउ यूनिवर्सिटी ऑफ फिनांस एंड इकोनॉमिक्स में शोधकर्ता गाओ कियान के अनुसार प्राचीन व्यापार मार्ग पर काबुल के बाद दुनहुआंग व्यवसाय का केंद्र था। प्राचीन रेशम मार्ग पर साहसिक यात्रा पर निकले लोग फारस की रोटी, भारत की मिठाइयां और अरब की नान खाते थे। इसके अलावा डोनर कबाब भी प्रसिद्ध था।

पुरातत्वीय खोज से पता चला है कि रेशम मार्ग ईसा पूर्व पहली शताब्दी के चीन के हान राजवंश के समय शुरू हुआ था। चीन ने इस मार्ग के माध्यम से पूरे विश्व में रेशम का व्यापार किया था। इस मार्ग से व्यापारियों के साथ ही फौजें भी गुजरने लगीं, फिर धार्मिक समूह भी। और इस तरह इस व्यापारिक मार्ग की गतिविधि के कारण ही मार्ग में पड़ने वाले सभी प्रमुख नगरों और राज्यों के सामाजिक जीवन में भी कई परिवर्तन आए। खैर, अब बात करते हैं हिन्दूकुश पर्वतमाला की।

इस पर्वत माला का प्राचीन नाम पारियात्र पर्वत : हिन्दूकुश पर्वत का पहले नाम पारियात्र पर्वत था। कुछ विद्वान इसे परिजात पर्वत भी कहते हैं। इसका दूसरा नाम हिन्दू केश भी था। केश का अर्थ अंतिम सिरा।

हिन्दू केश : इसे हिन्दू केश इसलिए कहते थे कि यहां भारत की सीमा का अंत होता है। केश का अर्थ होता है अंत। जैसे हमारे शरीर में केश (बाल) अंतिम सिरे के समान होते हैं। यहां तक भारत में रहने वाले हिन्दुओं का क्षेत्र था अर्थात हिन्दुओं के क्षेत्र की सीमा का अग्रभाग।

राम के कुश : यहां भगवान राम के एक बड़े बेटे कुश ने तपस्या की थी। तपस्या के बाद उन्होंने यहां पर अमृत दीक्षा ग्रहण की थी। कुश यहां के आसपास के संपूर्ण क्षेत्र पर अपना अधिकार रखते थे। इस पर्वतमाला के आसपास रहने वाली कई जातियों के नाम कुश के ऊपर ही हैं।

लव और कुश राम तथा सीता के जुड़वां पुत्र थे। उनका जन्म माता सीता के अयोध्या से निर्वासन के पश्चात वाल्मीकि आश्रम में हुआ था और यहीं पर दोनों बालकों का लालन-पालन हुआ। अत: दक्षिण कोसल प्रदेश में कुश और उत्तर कोसल में लव का अभिषेक किया गया था।

इस पर्वतमाला पर सिकंदर का कब्जा...

पश्चिमोत्तर भारत में विदेशियों का आक्रमण मौर्योत्तर काल में सर्वाधिक हुआ। सबसे पहले इस क्षेत्र पर यूनानियों ने आक्रमण किया। फिर सिकंदर ने जब इसे अपने कब्जे में ले लिया तो इसका नाम यूनानी भाषा में 'कौकासोश इन्दिकौश' यानी 'भारतीय पर्वत' बुलाया जाने लगा। बाद में इनका नाम 'हिन्दूकुश', 'हिन्दू कुह' और 'कुह-ए-हिन्दू' पड़ा। हिन्दु का मतलब गुलाम और 'कुह' या 'कोह' का मतलब फारसी में 'पहाड़' होता है और कुश का मतलब कातिल। गुलामों का पहाड़ अर्थात गुलामों का कातिल।

विदेशी आक्रमणकारियों की इस शृंखला में सबसे पहले 'बैक्ट्रिन ग्रीक' शासकों का नाम आता है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में इन्हें 'यवन' के नाम से जाना जाता है। इतिहास के इस काल की जानकारी बौद्ध ग्रंथों में मिलेगी। हिन्दुकुश पर्वत एवं 'ऑक्सस' के मध्य में स्थित 'बैक्ट्रिया' अत्यन्त ही उपजाऊ प्रदेश था। इसके उपजाऊपन के कारण ही 'स्ट्रैबो' ने इसे 'अरियाना गौरव' कहा। बैक्ट्रिया में यूनानी बस्तियों का प्रारम्भ 'एकेमेनिड काल' (लगभग 5 वीं शताब्दी ई.पू.) में हुआ। सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् बैक्ट्रिया पर सेल्युकस का अधिपत्य रहा।

सेल्यूकस वंश के 'आन्तियोकस तृतीय' ने 'यूथीडेमस' को बैक्ट्रिया का राजा मान लिया और 206 ईपू में भारत के विरूद्ध एक अभियान का नेतृत्व किया। यह अभियान हिन्दुकुश पर्वत को पार कर काबुल घाटी के एक शासक सुभगसेन के खिलाफ किया गया था। सुभगसेन को पॉलिबियस ने 'भारतीयों का राजा' कहा। सम्भवतः सुभगसेन द्वारा सांकेतिक समर्पण के बाद एण्ट्योकस ढेर सारे हाथी एवं हरजाने की बड़ी धनराशि लेकर वापिस चला गया। इसके बाद डेमेट्रियस और मीनेंडर (मिलिंद) नामक यवन शासकों ने इस पर्वत माला से आकर हमले किए। इस के बाद पार्थियन (पहलव), शक (सीथियन), कुषाण और हूण ने अफगानिस्तान (आर्यना) पर हमले किए। फिर अरब और तुर्की के खलिफाओं ने हमले किए। सिकन्दर के बाद डेमेट्रियस पहला यूनानी शासक था, जिसकी सेना भारतीय सीमा में प्रवेश कर सकी थी। उसने एक बड़ी सेना के साथ लगभग 183 ई.पू. में हिन्दुकुश पर्वत को पार कर सिंध और पंजाब पर अधिकार कर लिया। तब योग के महान ऋषि पातांजली काबुल क्षेत्र में रहते थे। वे वही के निवासी थे। उन्होंने अपनी पुस्तक महाभाष्यण 'गार्गी संहिता' एवं मालविकाग्निमित्रम् में इसका जिक्र किया है।

कैसे पड़ा हिन्दूकुश नाम...हिन्दू क्षेत्र पर्वत : इसे हिन्दू क्षेत्र नहीं कहते थे। यहां से गुजरने वाले लोग इसे हिन्दू क्षेत्र कहते थे इसलिए इस पर्वतमाला का नाम हिन्दू क्षेत्र पड़ गया। काराकोरम और हिन्दूकुश के बीच भारतीय राज पर्वतमाला है, जहां भारतीय ऋषियों के आश्रम और राजाओं के सैन्य शिविर थे। यहां गुरु लोग बाहर से आने वाले लोगों को ज्ञान देते थे। ईसा से 700 वर्ष पूर्व ही अफगानिस्तान (आर्याना) क्षेत्र में राजनीतिक, व्यापारिक और धार्मिक गतिविधियां तेजी से बढ़ने लगी थीं। बौद्धकाल में यहां का बामियान नगर बौद्ध

धर्म की राजधानी था। बहुत से तुर्की, चीनी और अरब के लोग जो यहां आते-जाते थे वे क्षेत्र शब्द नहीं बोल पाते थे। क्षेत्र को छेत्र कहते थे। क+श+त्र उक्त तीन शब्द से मिलकर बना क्षेत्र इसलिए कुछ लोग हिन्दू कशेत्र भी कहते थे। इस तरह यह क्षेत्र शब्द बोलने वाले लोगों के कारण बिगड़ता गया। क्ष और त्र बोलना आम लोगों के लिए थोड़ा कठिन था इसलिए इसमें से त्र भी हटा दिया गया और रह गया हिन्दू केश।

क्या यहां हिन्दुओं का कत्ल हुआ था...मध्य काल :... सन् 1333 ईस्वीं में इब्नबतूता के अनुसार हिन्दुकुश का मतलब 'मारने वाला' था। इसका मतलब था कि यहां से गुजरने वाले लोगों में से अधिकतर ठंड और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण मर जाते थे। लेकिन इब्नबतूता की इस बात का कुछ लोगों ने गलत अर्थ भी निकाला? उनके अनुसार उत्तरी भारतीय उपमहाद्वीप पर अरबों-तुर्कों के कब्जे के बाद हिन्दूओं को गुलाम बनाकर इन पर्वतों से ले जाया जाता था और उनमें से बहुत से हिन्दू यहां बर्फ में मर जाया करते थे। इस तरह की बातें करने वालों ने खुदकुशी से इस शब्द का अर्थ लिया। यहां हिन्दू खुदकुशी कर लेते थे इसलिए पहले हिन्दूकुशी और फिर हिन्दूकुश हो गया।

कहते हैं कि मुगलकाल में अफगानिस्तान को हिन्दूविहीन बनाने के लिए जो कत्लेआम का दौर चला उस दौर में आक्रांताओं ने इस पर्वतमाला को हिन्दुओं की कत्लगाह बना दिया था। यहां भारत के अन्य हिस्सों से लाखों की तादाद में गुलामों को लाकर छोड़ दिया जाता था या उन्हें अरब की गुलाम मंडियों में बेच दिया जाता था। माना जाता है कि अरब, बगदाद, समरकंद आदि स्थानों में काफिरों की मंडियां लगा करती थीं, जो हिन्दुओं से भरी रहती थीं और वहां स्त्री-पुरुषों को बेचा जाता था। उनसे सभी तरह के अमानवीय काम करवाए जाते थे। उनके जीवन का कोई अस्तित्व नहीं होता था। यातनाओं से केवल वही

थोड़ा बच सकते थे, जो इस्लाम में परिवर्तित हो जाते थे। फिर उनको भी शेष हिन्दुओं पर मुस्लिम तरीके के अत्याचार करने का अधिकार प्राप्त हो जाता था। लेकिन इस बात में कितनी सचाई है यह कोई नहीं जानता। माना जाता है कि तैमूरलंग जब एक लाख गुलामों को भारत से समरकंद ले जा रहा था तो एक ही रात में अधिकतर लोग 'हिन्दू-कोह' पर्वत की बर्फीली चोटियों पर सर्दी से मर गए थे। इस घटना के बाद उस पर्वत का नाम 'हिन्दूकुश' (हिन्दुओं को मारने वाला) पड़ गया था। लेकिन हिन्दूकुश नाम तो सिकंदर के पहले से ही प्रसिद्ध है? फिर हिन्दुओं के मरने से यह नाम कैसे पड़ा, यह समझ से परे है।

अब समझ लीजिए हिन्दु कौन ? हिन्दु शब्द किसी वेद, पुराण या उपनिषद् में नहीं मिलता, जब भारतवर्ष पर आक्रमणकारियों ने हमले किये तो सिन्ध नदी रुकावट में आती थी, वह स शब्द को ह का उच्चारण करते थे जिसे व हिन्दु बोलते थे, सिन्ध नदी के इधर रहने वाले सारे हिन्दु थे, उस दृष्टीकोण से पाकिस्तान के मुस्लिम समुदाय भी सब हिन्दु हैं।यह इतिहासकारों का मानना है। वास्तव में हिन्दु फारसी का शब्द दास जो भारतीयों के लिए प्रयोग किया गया।इंडिया भी इंडो (सिन्धु) से ही बना, लगभग 800 वर्ष पूर्व हिन्दोस्तान शब्द भी नहीं था तब यह भारतवर्ष कहलाता था, तो हिन्दुत्व क्या ? यदि हिन्दुत्व को वैदिक या वैष्णव सभ्यता से मिलाए तो सर्वें भवन्तु सुखिनः सब जीव जगत के सुखी रहे, यह हमारी संस्कृति कहती है,

बोद्ध धर्म भारत में ही महात्मा बुद्ध एक राज घराने में युवराज होकर जब देखा वैदिक युग में पतन हो रहा है, जात-पात का बोलबाला हो रहा है, शूद्र को शिक्षा नहीं दी जाती उसे धर्म कार्य नहीं करने दिए जाते तो यह अन्याय असहनीय हो गया, ऐसा ही भगवान महावीर ने महसूस किया और जन कल्याण के लिए तप-त्याग का रास्ता अपनाया। दोनों महापुरुष समकालीन हुए

हैं और समाज सुधारक। इन महापुरुषों ने का सब की आत्मा एक समान है कोई नीच नहीं, जो कार्य नीच करे वही नीच है। सब को धर्म करने का ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार है। जिससे राजे महाराजे इन दर्मों के अनुयायी बन गये। जैन धर्म समयानुसार सम्प्रदायों में बंटा परन्तु सिद्धात सब के एक जैसे ही रहे। बुद्ध धर्म में भी महाराजा आशोक के समय तक 18 सम्प्रदायों में बंट चुका था परन्तु उस समय बुद्ध धर्म के महान आचार्य नागार्जुन ने दो सम्प्रदायो को ही मान्यता दी, **महायान और हीनयान** यान का अर्थ होता है सवारी, महायान बड़ी सवारी, जो माहात्मा बुद्ध ही पार लंघा सकता है, इसमें मूर्ति पूजा का प्रचलन भी हो गया और बोद्ध भिक्षु एवं भिक्षुणियों को इकट्ठे रहना, सहवास करना और मास-मदिरा का प्रचलन होने लगा, विदेशों (चीन, तिब्बित, जपान) में तो फैल गया परन्तु भारत में जनता का मोह भंग हो गया। हीनयान लंका और ब्रह्मा में फैला।

सिक्ख धर्म जब मुगल भारत में आए तो भारतीय सभ्यता पर प्रहार करने लगे, धर्म परिवर्तन, जो न माने उनको कत्ल कर देना, उस समय सूफी फकीर महापुरुष गुरुनानक देव जी का अवतरण हुआ, जब बड़े हुए तो उनके पिता श्री कालूराम ने बीस रुपये देकर कहा जाओ कोई सच्चा सौदा कर के आओ, नगर में गये कुछ भी मन को अनुकूल नही मिला, आखिर एक जगह कुछ भूखे सन्त बैठे थे. पता चला, तो उनको बीस रुपये का काने-पीने का समान लाकर उनको तृप्त किया और घर आ गये, जब पिता श्री ने पूछा- तो कहा मैं सच्चा सौदा कर आया हूँ, भूखों की बूख शांत कर आया, यही सच्चा सौदा है, उस समय से सिक्ख धर्म में लंगर की प्रथा चल रही है, जो प्रत्येक गुरुद्वारे में चलती है।

गुरुनानाकदेव जी ने फरमाया-

पाँच तत्व का पूतला, ना नक मेरा नाम,
हिन्दू हो तो मारिये, मुसलमान भी नांय।।

इसके पश्चात नौ गुरु साहिब हुए, दसवें श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी हुए जिन्हों ने धर्म की रक्षा के लिए सिंह साजया। इनके लाडले दूधमुँहों ने धर्म की

खातिर अपनी कुर्बानी दे दी परन्तु हार नहीं मानी। इसके पश्चात गुरु गोबिन्दसिंह जी ने गुरु मान्यों ग्रन्थ को ही मान्यता दी। यह पंजाब की बहादूर कौम है, जो आज पूरे विश्व में फैल चुकी है।

काशमीर

ऐसा माना जाता है कि कशमीर का नाम कश्यप ऋषि के नाम से पड़ा था । कशमीर के मूल निवासी सब वैष्णव एवं श्रमण संस्कृति के थे । कशमीरी पंडितो की संस्कृति लगभग 6000 साल पुरानी है । कैलाश पर्वत के आस-पास भगवान शिव के गणो की सत्ता थी । दक्ष राजा का भी उल्लेख मिलता है। जिसका विवरण राजकवि कल्हण की राजतारंगनि में मिलता है । जो कोई कहता है कि भारत ने कशमीर पर कब्जा कर लिया तो वह पूर्णतय आधारहीन है 14 वी शताब्दी में आए तुर्किस्तान के मंगोल मुस्लिम आंतकी दुलुचा 60,000 की सेना लेकर आक्रमण किया और कशमीर में धर्मांतरण करके मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना की । दुलुचा ने गावों और नगरों को नष्ट कर दिया हजारों हिन्दुओ का नरसंहार किया गया, जिन्होंने इस्लाम कबूल नही किया वह आत्महत्या कर गए कुछ भाग गये . जम्मू कशमीर और लदाख हिन्दू शासको के अधीन रहा फिर मुगल सम्राज्य अकबर का हिस्सा बना । 1756 से अफगान शासक के बाद सन् 1819 में यह राज्य सिख साम्राज्य के अधीन रहा और सन् 1846 में रणजीत सिंह ने जम्मू क्षेत्र महाराजा गुलाब सिंह को सौंप दिया।

कशमीर में डोगरा वंशज उत्तर भारत का एक राजपूत राजवंश था । इस वंशज के साथ जड़े इक्ष्वकु वंश तक जाती है इसकी स्थापना महाराजा गुलाब सिंह ने की थी । 15 जून 1819 को कशमीर में सिख शासन की स्थापना हुई महाराजा रणजीत सिंह ने जम्मू को पंजाब में मिला लिया था । बाद में उन्हें

महाराजा गुलाब सिंह को सौंप दिया था। 1839 में रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद लाहौर का सिख साम्राज्य बिखरने लगा। अंग्रेजो को अफगानिस्तान की खतरनाक सरहद के साथ पर नियन्त्रण का मौका था। तो जम्मू के राजा गुलाब सिंह के लिए खुद को स्वतन्त्र घोषित करने का। महाराजा गुलाब सिंह 1822 से 1856 तक महाराजा रणबीर सिंह 1856 से 1885 तक महाराजा प्रताप सिंह 1885 से 1925 तक महाराजा हरिसिंह 1925 से 1947 तक कशमीर रियास्त के अंतिम शासक थे . वे राजा रणबीर सिंह के पुत्र और पूर्व राजा प्रतापसिंह के भाई राजा अमर सिंह के सबसे छोटे पुत्र थे। इन्हे राजगद्दी अपने चाचा प्रताप सिंह से प्राप्त हुई। जीवन काल में चार विवाह करवाए पत्नि तारा देवी (1928-1950) रानी साहिबा (1915-1920) संतान 4 पुत्र-2 बेटिया) इसके बाद 26 आक्टूबर 1947 को भारत में विलय के समझोते पर हस्ताक्षर कर दिये। देश की नई प्रशासनिक व्यवस्था जब हुई तो पाकिस्तानी कबाईलियो के रुप में आक्रमण कर दिया जिससे काफी हिस्से पर कब्जा कर लिया। तब महाराजा जम्मू में शिफ्ट हो गए। लेकिन फिर भी महाराजा हरी सिंह क्यों चिंतित थे? क्या परिस्थितियां थी जिनके चलते महाराजा हरी सिंह अपनी आजाद रहने की जिद्द छोड़कर 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन' पर हस्ताक्षर करने को तैयार हो गए थे? 27 अक्टूबर 1947 को जब भारत ने कश्मीर के साथ हुए 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन' को स्वीकार कर लिया था तो क्यों कश्मीर आज भी एक विवाद बना हुआ है? क्या भारत ने कश्मीर के साथ कोई विशेष 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन' साइन किया था जो कि अन्य रियासतों के साथ हुए समझौतों से अलग था? इन तमाम सवालों के जवाब समझने के लिए जरूरी है कि पहले कश्मीर के इतिहास और भूगोल को संक्षेप में

समझ लिया जाए. जम्मू-कश्मीर मुख्यतः पांच भागों में विभाजित था – जम्मू, कश्मीर, लद्दाख, गिलगिट और बाल्टिस्तान. इन सभी इलाकों को एक सूत्र में बांध कर एक राज्य बनाने का श्रेय डोगरा राजपूतों को जाता है. जम्मू के डोगरा शासकों ने 1830 के दशक में लद्दाख पर फतह हासिल की, 40 के दशक में उन्होंने अंग्रेजों से कश्मीर घाटी हासिल कर ली और सदी के अंत तक वे गिलगिट तक कब्ज़ा कर चुके थे. इस तरह कश्मीर एक ऐसा विशाल राज्य बन गया था जिसकी सीमाएं अफगानिस्तान, चीन और तिब्बत को छूती थीं. जिस वक्त भारत आज़ाद हुआ उस वक्त हरी सिंह कश्मीर के राजा हुआ करते थे. उन्होंने 1925 में राजगद्दी संभाली थी. यही वह दौर भी था जब कश्मीर में राजशाही के खिलाफ आवाजें उठने लगी थीं. और इन आवाजों के सबसे बड़े प्रतिनिधि थे – शेख अब्दुल्ला. 1905 में जन्मे शेख अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से पोस्ट ग्रेजुएट थे. लेकिन अपनी तमाम शैक्षणिक योग्यताओं के बावजूद उन्हें कश्मीर में सरकारी नौकरी नहीं मिल सकी थी क्योंकि यहां के प्रशासन में हिंदुओं का बोलबाला था। मुस्लिमों के साथ हो रहे इस भेदभाव के खिलाफ शेख अब्दुल्ला ने आवाज़ उठाना शुरू किया और धीरे-धीरे वे राजा हरी सिंह के सबसे बड़े दुश्मन बन गए।

अहंकार एवं फासीइस्जम

विश्व का महान लोकतन्त्र को अहंकार एवं फासीइज्म ने क्यों घेर लिया, विचार करने की आवश्यकता है। अब चुनाव देश एवं जनता के विकास पर नहीं होते बल्कि जातीय,वर्ग और धर्म के आधार पर होने लगे। ऐसा क्यों ? जिस देश का शासकवर्ग अपराधियों और कट्टरता का शिकार होगा वहाँ न्याय की आशा क्या की जा सकती है? वर्तमान केन्द्र सरकार (2019-24) में 43 प्रतिशत

(233)अपराधिक मुकद्दमों में संलिप्त सांसद है, जिनमें से 159 सांसद हत्या, बलात्कार, अपहरण जैसे दोषी है। केवल भाजपा के 303 में से 116 सांसद ऐसे है जो हम पर राज्य करते हैं। जिसमें अधिकांश मन्त्री पद पर आसीन है। अब लोकतन्त्र की परिभाषा बदल गई है- जनता से, जनता को लूटो और जनता पर राज्य करो हो गई है। भारत की ग्रैंड ओल्ड पार्टी कांग्रेस जिसके संस्थापक नेता बुद्धिजीवी, विद्वान सामाज हितैषी और न्यायकारी थे, जो विपक्ष को लोकतन्त्र की रीढ़ की हड्डी कहते थे और पूर्ण सम्मान देते थे, उसमें भी धीरे-धीरे बाहूबली,पद एवं पैसे के लालुप बढ़ने लगे जिससे वह पार्टी खोखली होती गई और बरसों से बागडोर एक हाथ मे रहने से कोई नया विचारक ही पैदा नहीं होने दिया। कोई समय था दुनिया कहती थी कि यदि कुत्ते के गले में कांग्रेस का पट्टा डाल दो तो वह चुनाव जीत जाएगा। अब इसके अध्यक्ष भी चुनाव हारने लगे और एक पक्षीय धर्म की शरण लेकर संसद में पहुँचे। क्योंकि बाप,दादी और नाना देश के प्रधानमन्त्री रह चुके हैं इस अहंकार से ग्रस्त देश को मार्गदर्शन नहीं दे सकते और अपनी संस्था को विनाश के कटघरे में छोड़ दिया। जिससे देश में प्रान्तिय नेता भी अपनी-अपनी दुकाने सजाकर राजे महाराजे बनने की होड़ लग गई, जिसमे नै,कां, पी डी पी, बहुजनसमाज पार्टी, समाजवादी, आरजेडी, जदयू, लोजपा,तृणमूल, अन्नाडीएमके, डीएमके. एनसीपी, शिवसेना और अब आप जिनकी कमान एक ही परिवार के हाथ में होती है।

2014 में गुजरात के मुख्यमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी भाजपा के संभावित प्रधानमन्त्री कहकर चुनाव में उतरे जिसमें श्री मोदी जी ने **सबका साथ, सबका विकास** के नाम से चुनाव प्रचार किया, जनता ने विश्वास के साथ समर्थन किया और वह प्रधान मन्त्री पद पर आसीन हुए, जनता में अपना प्रभुत्व बनाया और 2019 के लोकसभा चुनाव में 35 वर्ष के पश्चात बहुमत वाली सरकार देश को मिली। प्रथम अधिवेशन में ही मुस्लिम महिलाओ को तीन तलाक से मुक्ति और कश्मीर की धारा 370 को समाप्त कर दिया। लगभग पूरे देश ने इसका स्वागत किया। फिर शीतकाल अधिवेशन में नागरिक संशोधन कानून पास करवाया

जिससे देश का एक वर्ग क्षुब्ध हो गया और अंदोलन शुरु हो गये, जिसमें दिल्ली का शाहीन बाग जिसमें एक समुदाय की महिलाएं दिन-रात दिसम्बर-जनवरी की सर्दी में खुले असमान में डटी हुई थी और दिल्ली के विधानसभा का चुनाव 8 फरवरी को घोषित हो चुका था। गृहमन्त्री अब देश के गृहमन्त्री है किसी पार्टी एवं किसी समुदाय के नहीं, सर्वप्रथम महाराष्ट्र विधानसभा के चुनाव भाजपा और शिवसेना ने मिलकर लड़े, इनका गठबंधन बहुत पुराना था दोनों एक ही विचारधारा के परन्तु मतभेद थे जिस चुनाव से पहले मिलकर कुछ समाधान किया, चुनाव परिणाम आशा अनुकूल न रहे जिससे कुछ खटास पैदा हो गई और हमारे गृहमन्त्री जो उस समय भाजपा के अध्यक्ष भी थे ने अहंकार में रहे कि हम सरकार बना लेगें, जिसमें राजनीति का कुशल खिलाड़ी शरद पवार ने अपने भतीजे के माध्यम से सब को उल्लू बना कर अपना सवार्थ साधा जो पहले भाजपा सरकार ने अजीत पवार पर अनेकों घोटालों में दोषी और जांच सी बी आई को सौंप रखी थी, उसी को साथ लेकर रातो-रात राज्यपाल ने ओथ भी दे दी और अजीत पवार को उप-मुख्यमन्त्री घोषित कर दोषमुक्त कर दिया और उधर शरदपवार नें उद्धव ठाकरे से अपनी शर्ते मनवाने पर मजबूर कर दिया, जिससे भाजपा की 24 घंटे की सरकार धराशायी हो गई कारण केवल अहंकार.....अहंकार। झारखंड विधान सभा चुनाव में भी अंहंकार से चुनाव हार गये। दिल्ली में चुनाव से पहले पुलीस के माध्यम से आराजिकता,जनता का ध्रुविकरण से फासीइज्म मानसिकता से अपनी सारी ताकत झोंक दी, भाषणों में देश के दुशमनों को गोली मारो, पाकिस्तान-हिन्दोस्तान का मैच, स्वयं गृहमन्त्री जी के भाषण ऐसा कमल का बटन दबाओ की अवाज शाहीन बाग में गूंजे। किसी ने जुरत तक नहीं की वहां भी हमारे नागरिक ही हैं जिन्होंने छः माह पूर्व हमें वोट भी दिया था। इसके साथ ही सिख समुदाय भी बागी सुर में विपरीत हो गये और दिल्ली भाजपा अध्यक्ष मनोज तिवारी जो एक गायक है राजनीतिज्ञ नहीं भ्रमतन्त्र में रहा कि हमार 48 सीटें आ रही है, न जाने वह 4 उड़ कर आप की तरफ क्यों चला गया, कारण अहंकार और फासीइज्म। सब कुछ लुटा के भी

होश न आई तो क्या ? ? ? ? ? ? देश को एक नये विकल्प की तलाश थी यदि आप पार्टी में लोकतन्त्र व्यवस्था करे तो अरविन्द केजरीवाल श्री मोदी को अब टक्कर दे सकता है। आनेवाले चुनाव बिहार में भाजपा के झुमले चलने वाले नहीं उनको भी दिल्ली की तरह स्थानीय समस्याओं का समाधान चाहिए । यदि अब भी भाजपा की तन्द्रा नहीं टूटी तो चार वर्ष के पश्चात मोदी मैजिक चलने वाला नहीं रहेगा ।

अंधकार में हाथ फैलाया, कहीं का कहीं आपन को पाया।
किसान कानून की बैठ गोद में, देखा रूप महा विकराला।।
मृग तृष्णा के मानिन्द भटका, किसान अन्दोलन है खटका।
ज्ञान गया अज्ञान पसारा, लोकतन्त्र का निकला दिवाला ।।

लोकतन्त्र vs षडयन्त्र

गीता का अर्थ धर्मोपदेश
गीता का उद्देश्य कायरता छोड़ कर्त्तव्य निरवाहन
धर्म मानवता
हिन्दुत्व-सर्वे भवन्तु सुखिनः, सुखी रहें सब जीव जगत के।
संस्कृति विपक्ष का सम्मान, जीओ और जीने दो
सदियों की गुलामी के बाद भारत ने 1947 में अजादी की खुली हवा में सांस ली, तो भारतीय नेताओं के आगे समस्या थी राज्य कैसा हो? उन नेताओं में अग्रणी थे भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री श्री जवाहर लाला नेहरू, वे कांग्रेस अध्यक्ष भी थे, उन्हों ने चयन किया जनता की सरकार जनता के लिए जनता द्वारा (लोकतन्त्र)। उसके लिए एक कैबिनट गठित की गई, पंडित नेहरू जी ने कहा,

लोकतन्त्र में विपक्ष की भूमिका अहम होनी चाहिए, जिससे दो सदस्य कांग्रेस की विपरीत विचारधारा वाले महान व्यक्तित्व डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी हिन्दुत्व विचारधारा वाले और डॉ भीमराव अम्बेदकर जात-पात के विरोधी और लोकतन्त्र के लिए संविधान के निर्माता, जो विश्व के समस्त संविधनों से उत्कृष्ट भारत का संविधान माना गया है। उन्हों ने जात-पात को धर्म मान लिया, जिससे धर्म निरपेक्ष संविधान कहा जाता है, वास्तव में धर्म तो सब मजहबों का एक ही है मानवता चाहिए था सम्प्रदाय निरपेक्षता, उस धर्म निरपेक्ष का लाभ उठाने के लिए लोकतन्त्र को षडयन्त्र बनाने के प्रयास अब चल रहें हैं। धर्म के नाम पर वोट प्राप्त करने के लिए जनता को मूर्ख बनाया जा रहा है, विद्वेष की भट्टी जलाई जा रही है। मन्दिर- मस्जिदों के नाम पर जनता का वर्गीकरण किया जा रहा है, नेतागण दुनिया को दिखाने के लिए मीडिया को साथ लेकर मन्दिर में पूजा-अर्चना, कभी गुरुद्वारे में जाकर माथा टेकना, कोई सिर पर उठाकर अजमेर शरीफ में चादर चढ़ाने जा रहा है,फिर वही मन्दिर में पूजा कर जनेऊ पहनता है, क्या यह सब लोकतन्त्र के लिए षडयन्त्र किये जाते हैं, जबकि-

भोजन,भजन और नारी, तीनों परदे के अधिकारी, यह सब व्यक्तिगत है, कोई कितने भी ऊँचे पद पर हो, उसको अपनी मान्यता अंनुसार विधि-विधानानुसार उपयुक्त है, दिखावे में यह सब षडयन्त्र है लोकतन्त्र का छिलावा है। भारत के जितने भी ऊँचे पदो पर असीन व्यक्तीत्व हुए, लोकतन्त्र को सुदृढ़ करने का प्रयास किया। कांग्रेस का देश पर लम्बा शासन रहा, जो देश भक्त थे समयानुसार वह अपना कृतव्य निष्ठा से निभा गये, युवाओं को आगे नहीं आने दिया और वर्तमान के जो नेतागण है अपनी जागीर समझकर कांग्रेस और लोकतन्त्र के हत्यारे बन चुके हैं।

देश प्रेमी राज्यधर्म निभाने वाले स्वच्छ राजनीति के प्रणेता श्री अटलविहारी वाजपायी जी ने बीसों प्रान्तीय पार्टियों टुकड़े-टुकड़े को इकट्ठा करके एक गैंग बनाया था,वर्तमान के शासक उसका फल खा रहे हैं, जो यह हरएक को कहते हैं।भारत के इतिहास की एक सुप्रसिद्ध घटना, जब कौरव और पांडवों की सेना

कुरुक्षेत्र के मैदान में पहुँच चुकी थी, शस्त्रों से सुसज्ति अपन-अपने रथों पर आरूढ़ कोरवों की तरफ महान गुरुजन द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, भीष्म पितामह एवं मित्रगण सम्बन्धी हैं, तब धर्मपुत्र युधिष्ठर अपने रथ से नीचे उतरते हैं, शस्त्र उतारते है और पैदल कौरवों की तरफ चल पड़े, समस्त पांडव सेनापति शंकाग्रस्त देख रहें है, क्या युध्ष्ठिर हार मान गये हैं, युधिष्ठर भीष्मपितामह को प्रणाम करते हैं और युद्ध की आज्ञा मांगते हैं, यह थी हमारी सभ्यता और संस्कृति। विपक्षी भीष्मपितामह विपक्षी को आशीश देते है **विजयीभव्** । यह थी हमारी सभ्यता और संस्कृति। आज भारत के शासक विपक्ष को निगलना चाह रहे हैं षडयन्त्रों के माध्यम से।

1 दिल्ली चुनाव में जो शाहीन बाग की घटना हुई, कुछ नेताओं ने भड़काया, गोली मारो सालों को और कपिल गुर्जर जिस ने तीन राऊँड गोली चलाई, जिसे मनोज तिवारी अध्यक्ष दिल्ली भाजपा ने आप का सदस्य कहा जाने लगा, उसे भाजपा का सदस्यता दी गई, जब मीडिया ने उछाला तो सदस्या रद्द कर दी गई, जब मीडिया ने उससे प्रश्न किये तो वह कहने लगा मैं तो हिन्दुत्व के लिए किया। यह कैसा षडयन्त्र।

2 भाजपा शासक प्रान्त लव जैहाद का कानून बना रहे हैं। प्यार (मौहब्बत) किसी जात-पात के आधीन नहीं होता, न ही यह कोई गुनाह है। हाँ भय, लालच और दादागिरी से किसी का हृदय परिवर्तन किया जाये तो अपराध है, जिसके लिए दण्ड व्यवस्था है। क्या यह राजनीति पर मान्य नहीं, ई. डी का भय, पैसे पद का लालच, व राज्यपालों द्वारा दादागिरी से विधायको, सांसदो की पार्टी बदलाकर लव जिहाद नहीं है।

3 शिव सेना के गठबंधन से महाराष्ट्र का चुनाव हुआ, मुख्यमन्त्री पद के लिए घमासान रहा, भाजपा सरकार ने आजीत पवार पर अपराधों

की झड़ी लगाकर दोषी माना, जब उसने अपने 55 विधायकों की सूची से समर्थन का अश्वासन दिया, रातों-रात उसको उप-मुख्यमन्त्री घोषित कर दोषमुक्त कर दिया, क्योंकि भाजपा की गंगा में कोई डुबकी लगा ले तो सब पाप धुल जाते हैं, 24 घंटे के अन्दर त्यागपत्र, क्या यह लोकतन्त्र था या षडयन्त्र ?

4 अकाली दल का 25 वर्ष का नाता कृषि कानूनों द्वारा तोड़ा गया, पंजाब का किसान जिसमें वैष्णव, मुस्लिम, व सिख समुदाय के हैं, पहले वह किसान है, उसके पश्चात उनका समुदाय अपनी-अपनी श्रद्धानुसार, फिर सब किसान देशद्रोही, टुकड़े-टुकड़े गैंग, माओवादी, आंतकवादी एवं खालिस्तानी कैसे? लाखों की संख्या में किसान दिसम्बर-जनवरी की ठंड में खुले आकाश में पड़े हुए हैं, दिखावे के लिए गुरुद्वारा शीशगंज में माथा टेकना लोकतन्त्र है या षडयन्त्र ?

5 जिस प्रान्त में भाजपा की सरकार नहीं, उनसे भेदभाव, जैसे 2016-2020-21 तक 5 वर्ष के आंकड़े देखे तो पता चलता है, मद्ध्यप्रदेश के किसानों को 47.58 लाख किसानों को न्यूनतम समर्थन मुल्य का लाभ मिला, जबकि पंजाब में 44.56 लाख किसानों को, जबकि 2016 में पंजाब के किसानों की प्रतिशत 41 थी और अब घटकर 24% रह गई है और मध्यप्रदेश के किसानों की 23% से बढ़कर 37% हो गई है, यह F.C. I के डाटा बता रहे हैं, रबी सीजन वर्ष 2020-21 मध्यप्रदेश 15.93 लाख किसान और पंजाब 10.49 लाख यह आंकड़े लोकसभा सितम्बर 2020 के हैं।

6 आबेसी जी महाराज जो अपनी मर्जी के हथकंडे अपनाकर, जैसी भाषा बोले भाजपा कुछ नहीं कहेगी, क्यों कि वह वोट कटवा होगी अन्य पार्टियों के लिए, जिसे लाभ भाजपा को मिलेगा।

जिससे लोकतन्त्र का निर्माण किया गया। अब भारत की जनता को लोकतन्त्र एवं षडयन्त्र को समझना चाहिए। सरकार कोई भी हो लोकतन्त्र सुरक्षित रहना चाहिए।

किसान अन्दोलन या दलालो का अन्दोलन को समझ लीजिए।

क्रान्तिकारी किसान युनियन पंजाब के अध्यक्ष 70 वर्षिय डॉ दर्शन पाल सिंह पटियाला से M.B.B.S है 2007 में नौकरी छोड़कर किसानी में आए।

किसान मजदूर संघर्ष कमेटी पंजाब के प्रधान सतनाम सिंह भी ग्रैजुएट किसान है।

डकौंदा के महासचिव जगमोहन सिंह पटियाला के पोस्टग्रैजुएट और डिप्लोमा होल्डर पाँच एकड़ जमीन के मालिक हैं। सहकारिता विभाग से नौकरी छोड़कर 1993 में पैतृक कृषि व्यवसाय अपनाया।

किरती किसान युनियन के लौगोवाल महज 35 वर्षिय युवक Political Science में पोस्टग्रैजुएट है

उगराहां के महासचिव सुखदेवसिंह कोकरीकलां B.Sc., B.Ed है। 1972 में सरकारी नौकरी प्राप्त की, जिसे 1998 में छोड़कर महज 2.5 एकड़ जमीन के मालिक हैं।

जोगिन्दर सिंह भारतीय सेना में रिटायर हुए 75 वर्षीय है।

यह सब दिल्ली के दरवाजे पर अपनी अवाज सुनाने पहुँचे हुए है। चाहे यह किसी मजहब के या किसी भी पार्टी को वोट देते हों, हैं तो पंजाबी-भारतीय नागरिक इनके लिए अपशब्द निंदनीय हैं।

हमें यह जानकर बहुत हर्ष था कि काफी अरसे के बाद एक सुदृड़ (मजबूत) सरकार आई है जिसका नेतृत्व श्री नारेन्द्र मोदी जी कर रहें है। वैष्णव एवं श्रमण संस्कृति के अनुसार चक्रवर्ती महाराजा (आजकल प्रधानमन्त्री) किसी पूर्व जन्म के पुण्य (कठोर तपस्या) से मिलता है। अब भी वह गीता के प्रशंसक

एव अभ्यासी है नवरात्रों में अन्नरहित उपवास करते हैं विदेशो में भारत की छवि को अच्छा बनाया विशेषकर इस्लामिक देशों में, स्वः श्रीमति सुषमा स्वराज और स्व श्री अरुण जेतली के साथ ने विशेष लाभ दिया। स्वच्छ भारत बनाने का प्रयोग कोई सड़क की गन्दगी हटाने से नहीं होगी स्वच्छ राजनीति को अपनाना चाहिए विपक्ष का सम्मान होना चाहिए, भारत में जन्में हर भारतीय मजहब रहित हों, पूजा अर्चना व्यक्तिगत हो, तभी लोकतन्त्र षडयन्त्रों से बच पाएगा।

सरकारें आती रहेंगी, जाती रहेंगी, कानून बनते रहेंगे, विरोध होता रहेगा, शासकवर्ग तानाशाही न हो, वह राजे-महाराजे नहीं, चुनाव द्वारा देश के सेवक हैं, राम मन्दिर बने बहुत प्रसन्नता का विषय है परन्तु वह केवल पत्थरों का नहीं उनके आदर्शो का भी महत्व होना चाहिए, श्री राम ने एक धोबी की बात को भी समझा, देश की सरकार को राजधानी के द्वार पर आए भारतीय किसान कड़कड़ाती ठंड में जो पुकार लेकर आए हैं उनकी पुकार सुनी जाए न की हठधर्मी नीति से देश में अवव्यस्ता को निमन्त्रण दिया जाए।

जय लोकतन्त्र, जय भारत, जय भारतीय संस्कृति सर्व धर्म सम्मान, जीओ और जीने दो। जय जवान-जय किसान।

नहीं बुद्धी नहीं वचन बल, साहित्य का नहीं ज्ञान ।
क्षमा भूल सब कीजिओ, सृजन लेखन गुणवान ।।
प्रभु कृपा से कर रहा हूँ, लुधियाना में वास ।
स्वतन्त्र चाहता सदा, भारतीयों का सुखवास ।।

अणु,परमाणु और विषाणु

अणु,परमाणु और विषाणु मानवता के घातिक, जो खुली आँख से भी देखे नहीं जाते, कितने विनाशकारी है, अनुभव भी नहीं किया जा सकता और विनाश लीला रचाते, मानवता को अंधकारमयी बना देते हैं। वैज्ञानिकों ने अणु को सुक्ष्म कण बताया जिसका विभाजन न हो सके। परन्तु जर्मन के तानाशाह हिटलर ने अपने वैज्ञानिकों को इसे तोड़कर, जो उर्जा पैदा हो उसे विनाशकारी कैसा बनाया जाए में लगा दिया, और वह सफल भी हुए। इसके तीन भाग कर दिये- इलैक्ट्रोन, प्रोटौन और न्यूक्लियर जो अति घातक हो गये। परन्तु अमैरिका ने किसी ढ़ंग से इसे चुरा लिया और दूसरे विश्व युद्ध में उपयोग भी किया, जपान के नगर हिरोशिमा और नागासाकी पर एटम बम्ब गिराकर जो विनाशलीला रची, समस्त विश्व त्राहा-त्राही कर उठा, परन्तु इस विनाशलीला का क्षेत्र यह दो नगर ही रहे। उलझते-सुलझते सब देश ऐसी विनाशलीला से बचने पर सहमत होते हुए भी परमाणु शक्ति पर पूर्णतः निर्भर हो गये। आज विश्व के हर बड़े-छोटे देश के पास परमाणु शक्ति द्वारा संचालित मिजाईलज एवं अन्य घातक उपकरण माजूद हैं। जब इन का उपयोग होता है, तो विनाश का क्षेत्र सीमित ही रहता है, जहाँ इनको टारगेट किया जाए, इससे भी आगे लेजर प्रणाली पर अनुसंधान चल रहे हैं। कुछ देश जैविक विनाशलीला पर अनुसंधान कर रहे हैं जिनका क्षेत्र असीमित हो कर पूरा विश्व उसकी लपेट में आ जाए। कुछ मालूम पड़ता है कि चीन इसमें आगे है और कारोना उसकी देन हैं। यह एक ऐसा विषाणु है जिस पर अभी खोज नहीं हो सकी और इसका उत्पादन स्त्रोत्र चमगादढ़ जीव है, जो सर्वप्रथम चीन में ही विस्फोट हो गया और उसका उद्योगिक शहर वुहान इसकी लपेट में आ गया। उस उद्योगिक नगर में समस्त विश्व के नागरिकों का आवागमन लगा रहता था, जिससे कोविड-19 नाम का विषाणु, मनुष्य से मनुष्य तक असानी से हाथ मिलाते हुए, गले मिलते हुए,प्रेम का अजहार करते दुष्मन बन जाता है और तीन सप्ताह के अन्दर पूरा फैल जाता है, जिससे मृत्यु संभावित है। आज चीन का वह प्रसिद्ध नगर उजाड़ हो कर

उद्योगों में सन्नाटा छाया हुआ है, मीडिया वहां का स्वतन्त्र समाचार देने में प्रतिबन्धित है, यह चीन की विश्वव्यापी साजिश है और एक प्रान्त से आगे इस को फैलने नहीं दिया और समस्त विश्व उसकी लपेट में आ गया,इस राज़ को प्रकट करने में बहुत देरी कर दी, अब तक पूरे विश्व में लगभग 26000 मानव सदा के लिए सौ चुके हैं और सात लाख से अधिक प्रभावित हैं। इस विषाणु का क्षेत्र पूरा विश्व बन चुका है, इस से बचने के लिए अभी कोई वैक्सीन एवं दवाई कारगर नहीं हुई, इसका अभी तक उपाय है एक-दूसरे से दूरी बनाकर रखनी जिससे पूरा विश्व लॉकडऊन है। कारोबार बन्द,सरकारी-गैर सरकारी दफ्तर बन्द, समस्त उद्योग बन्द, नगरों में सन्नाटा, दिहाड़ीदार कमाने वाले भूख से विलकने के लिए मजबूर, अस्पतालों मे सीनियर डॉक्टर गायब, दुःखिया मरीज मरने को मजबूर, क्योंकि केवल इटली में 50 डॉक्टर मृत्यु का ग्रास बन चुके हैं और 10000 से अधिक मानव अपनी जीवन लीला समाप्त कर चुके है। विश्व का महान देश अमरीका सबसे अधिक संक्रमित है । पूरा भारत लॉकडाऊन एवं कर्फ्यु की लपेट में है। केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा प्रयास किये जा रहे है कि प्रत्येक भारतीय इस संकट से बच सके और उसकी अवश्यकताओं के लिए भरसक प्रयास किये जा रहे हैं अभी तक अवधि तीन सप्ताह जो 14 अप्रैल है से आगे बढ़ने के संकेत मिल रहे है, हम भारतीय इस आपदा में सब एक हैं, इसमें कोई राजनीति एवं जात-पात नहीं केवल हैं तो एक मानवता । आओ संकल्प करें, इस दुःख की घड़ी में सरकार एवं एक-दूसरे के सहयोगी बनें, अपने अपने अधिष्ठित देव गुरु धर्म की स्मरण करें और इस आपदा से निजात पाएं ।विश्व शांती की कामना करें। साहस,धैर्य और अनुशासन से ही हम इस दुःख की घड़ी एक-दूसरे की सहायता ही राष्ट्रधर्म है। इस दुःख से निकल कर आगे इस से भी बड़ा संकट आने वाला है, उद्योगिक उत्पादन एवं आर्थिक व्यवस्था और प्रण करें कि हम चीन की बनी वस्तुएं का उपभोग नहीं करें, जिससे चीन को भी अपनी शरारत का एहसास हो सके । हम विजयी होगें ।

आप ही करता भोगता, कर्म शुभा शुभ जीव ।

कारण दोनों के लिए, होते अमर सदैव ।।
जो सहित वासना कर्म करे, सुभ दुनिया के सुख पाते हैं।
और अशुभ कर्म से निर्विवाद, वह सब कष्ट उठाते हैं।

भारतीय राजनीति का गिरता स्तर

संस्कृति और सभ्यता वाला भारत की राजनीति (चाणक्य राजनीति) विश्व प्रसिद्ध थी । दुर्भाग्यवश भारत सदियों तक गुलामी की जंजारों में झकड़ा रहा परन्तु फिर भी हमारी संस्कृति और सभ्यता ने हमे इन गुलामी से निकाल कर एक लोकतन्त्र भारत का निर्माण हमारे पूर्वज नेताओं ने उच्चस्तर की राजनीति का अवाह्न किया । भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जब प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के समय रेलमन्त्री थे तो एक रेल दुर्घटना हुई और श्री लालबहादुर शास्त्री ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया । फिर जब प्रधानमन्त्री श्रीमति इन्दिरागांधी की हत्या अपनी ही सेवाकर्मी द्वारा की गई तो श्री राजीवगांधी को प्रधामन्त्री बनने का अवसर मिला । चुनाव हुए और सर्वादिक बहुमत तीन-चौथाई विजयी सांसदो वाली सरकार बनी जो पाँच वर्ष के पश्चात फिर चुनाव में बहुमत प्राप्त न कर सकी तो श्री राजीवगांधी ने प्रधानमन्त्री पद लेने से इन्कार कर दिया और कांग्रेस के संगठन पर बल देने का निश्चय किया । दुर्भाग्यवश उनकी भी हत्या कर दी गई तब मिलीझुली सरकारें बनती रहीं जो 35 वर्ष तक चली । जिसमें पाँच वर्ष भारत का सर्वप्रिय नेता श्री अटलविहारी वाजपायी जी का कार्यकाल रहा जिसमें कुछ असुखद घटनाएं घटी (रूबिया अपहरण कांड के लिए आंतकवादियो की रिहाई, जहाज हाईजैक के एवज में आंतकवादियो को कन्धार पहुँचाना, सांसद पर हमला और पाकिस्तान से कारगिल की चोटी पर युद्ध) और उन्होने अपना गृहमन्त्री अल्पसंख्यक समुदाय से श्री मुफ्ती मौहम्मद सैयद को ही रखा और अल्पसंख्यक समुदाय के चार राष्ट्रपति जो भारत की सर्वोच्य पद है पर शोभायमान रहे यह है भारतीय

राजनीति की सभ्यता और संस्कृति जो आज से 73 वर्ष पूर्व नेहरू-लियाकतअली समझोते के अन्तर्गत अल्पसंख्यक वर्ग की सुरक्षा सन्धि थी। भारत मे कोई जातिय भेद-भाव नहीं हुआ जबकि हमारे से ही अलग हुआ पाकिस्तान जो इस्लामिक देश की गरंटी करता है वहां इस समझोते की धूलि उड़ाई गई और अल्पसंख्यको की हत्या,प्रताड़ना,कुचलना और जबरन धर्म परिवर्तन करवाना एक आम बात है के साथ वहां के मुस्लिम नागरिक भी सुरक्षित नहीं और आर्थिक व्यवस्था चरमराई हुई है, वह आप न ढ़ंग से जी रहा है और न ही हमारे देश के अल्पसंख्यकों को जीने देता है, आंतकवादियों,घुसपैठियों के माध्यम से वातावरण विषैला करने में कोई कसर नहीं छोड़ता जिससे हमारे देश की राजनीति गंदली हो रही है। हमारे प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्रमोदी जी ने सामाजिक समानता से मुस्लिम महिलाओं की प्रथा तीन-तलाक से मुक्ति दिलवाकर एक आजाद भारत की नागरिक जीवन जीने का अधिकार दिया। कुछ कट्टरपंथी मुल्ला-मौलवीयों का धंधा चौपट हो गया वह नहीं चाहते थे कि मुस्लिम महिलाएं आजाद होकर पढ़-लिख जाए और हमारे वस में न रहे। जिसकी तलाश में कुछ मुस्लिम नेताओं ने उनका साथ दिया और भारत का नागरिक संशोधन कानून के विरोध का अवाहन किया। कुछ राजनीतिक पार्टियों ने आग में घी डालने का काम किया जिससे उनकी राजनीतिक रोटिया सेकी जा सके। पूरे भारत में इसका विरोध आरम्भ हो गया। देश की राजधानी दिल्ली में भी 15 दिसम्बर 2019 से शाहीनबाग में मुस्लिम महिलाओं द्वारा अन्दोलन-धरणा निरन्तर चलता रहा। ठिठुरती रातों में खुले आसमान में धरणा कोई छोटी बात नहीं जिस पर हमारे गृह-मन्त्रालय और उसके अधीन पुलीस कुंभकरण की नींद सोई रही और कोई भी शासकीय नेता व अधिकारी ने इसका समाधान ढ़ूढने का प्रयास नहीं किया। उसी समय दिल्ली विधानसभा के चुनाव घोषित हो गये जो

फरवरी मे होने थे और उनका परिणाम 11 फरवरी को आना था । शासकीय पार्टी को वेट एन्ड सी (प्रतीक्षा करो और देखो) का वाइरस ग्रस्त कर गया, कोई भी अन्दोलन लम्बा खीच जाए तो कभी वह स्वयं समाप्त हो जाता है अन्यथा उपद्रव का रुप धारण कर लेता है । शायद शासकीय पार्टी इस भ्रम में रही कि दिल्ली चुनाव में उनको इसका लाभ मिलेगा, मुस्लिम समुदाय के विरोध में अन्य का लाभ मिल जाएगा क्योंकि छः महीने पहले संसदीय चुनाव में सातों सांसद विजयी रहे थे । शासकीय पूरा मन्त्रीमन्डल के साथ प्रधानमन्त्री और गृहमन्त्री ने पूरी शक्ति झोंकने से परिणाम विपरीत आ गये 40 प्रतिशत मत प्राप्त करने के बावजूद केवल 11 प्रतिशत विधायक ही सफल रहे और विरोध में आप पार्टी 54 प्रतिशत मत प्राप्त कर 89 प्रतिशत विधायक 62/70 सफल रहे । केन्द्र में शासकीय पार्टी को वेट एन्ड सी (प्रतीक्षा करो और देखो) का वाइरस इतना ग्रस्त कर गया कि अन्दोलन पर कोई विचार नहीं किया और पुलीस का भी मूकदर्शक बने रहने का परिणाम घातक हो गया । दिल्ली पुलीस की जे.एन.यू और जामिया विश्वविध्यालय पर अत्याचार से क्षुब्ध युवाशक्ति का लाभ कुछ विध्वंसक शक्तियां उठानें में सफल रही और तीन दिन दिल्ली में जो तांडव रचा, उसने मानवता को झकझोर कर रख दिया। उपद्रव ग्रस्त इलाकों के 5/8 विधायक भाजपा और सासंद भी है । गृहमन्त्रालय ने खुफियातन्त्र के परामर्श को भी अनदेखा करते हुए कोई ठोस कदम नहीं उठाया न ही पुलीस का दंगा स्कवैड को सतर्क किया कारण शासकीय पार्टी को वेट एन्ड सी (प्रतीक्षा करो और देखो) का वाइरस, जब दिल्ली जलने लगी तो सतर्क हुए तब बहुत देर हो चुकी थी जिससे एक पुलीस वाले के साथ 50 से अधिक नागरिक मारे गये 200 से अधिक घायल 300 के लगभग व्यापारी प्रतिष्ठान और 100 के लगभग निवास स्थान

अग्नि की भेंट चढ़ गये अनगिनत टूव्हिलर और कारे राख हो गई, दोनों तरफ पत्थरबाजी,गोलीबारी,तेजाब, पैट्रोलबन्ब और घातक हथियारों का प्रयोग किया गया। जिसने भारतीय सभ्यता और संस्कृति की राजनीति का दिवाला निकाल दिया । निर्भयता तथा ईमान कहाँ गया, धर्म निरपेक्षता और उधारवादी लोकतन्त्र को मौकापरस्त राजनेताओं तथा उनके संरक्षकों ने क्या विचारा, जिससे हमारी सांसद की गरिमा भी ध्वस्त के कगार पर जा पहुँची। सिद्धांत तथा विचारधाराओं ने भारतीय राजनीति का मार्गदर्शन किया था। देश को सशक्त शासक और सशक्त ही विपक्ष की आवश्यकता है परन्त दुःखद बात है कि सशक्त शासक विपक्ष को निस्तेनिबूध करने की भावना रखता है, ग्रैंड ओल्ड पार्टी कांग्रेस जो अब भी पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छतीसगढ़,झारखंड और महाराष्ट्र में प्रत्यक्ष और सहायक बन कर गतिशील है वह कमजोर अध्यक्षता और अन्तर्हकलह से जूझ रहा है विधायक पद और पैसों से पाला बदल जाते हैं जैसे कर्नाटक में हुआ और अब मध्यप्रदेश में चल रहा है केन्द्र का शासक वर्ग विपक्ष को धूल चटाने की नीति के अन्तर्गत कहीं आप पार्टी राष्ट्रीय पार्टी का स्थान न ले सके दिल्ली में मूकदर्शक बनी रही जिससे देश के गृहमन्त्री और उनका विभाग ने भारतीय राजनीति का स्तर इतना गिरा दिया, जिससे प्रधानमन्त्री की छवि पर आँच आई है। पंजाबी की कहावत है लड़े फौज नां सरकार दा। कोई भी देश की गलती प्रधानमन्त्री को कटहरे में खड़ी करती है। इसमें कोई शक नहीं कि इस समय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्रमोदी के समान अन्य कोई नेता नहीं परन्तु स्वच्छ भारत के नाम से राजनीति गंदली न हो इनको ठोस कदम उठाना होगा। विवशता है कि 43 प्रतिशत सांसद ही स्वच्छ नहीं अपराधों से घिरे हुए हैं और अपनी सांसद वर्चस्वता से वह दोष मुक्त हो जाते हैं वह राजनीति की गंदगी कैसे दूर करने देगें और न्यायपालिका भी मजबूर हो जाती है क्योंकि अन्ततः वह

सरकार द्वारा ही मनोनीत होते है। जिस न्यायधीश ने पुलीस की प्रताड़ना की उसको आधी रात को ट्रांसफर कर दिया। राजनीतिक पार्टिया भी घरेलु संस्थान बन चुकी है जिससे राजनीति का स्तर गिरता जा रहा है। राजनीतिज्ञ का चरित्र केवल शासन अथियाना और एक – दूसरे का विरोध करना ही देश-प्रेम हो गया है। जो विरोध कर वह देशद्रोही और जो शासकीय नेता अनैतिक भाषा बोले उसकी सुरक्षा कड़ी कर दो, विदेशियों से हम ने आजादी पा ली परन्तु जो बराईयों से आजादी मांगे वह जिन्नाह की आजादी की मांग बन जाए, जो राजनीति का गिरता स्तर और देश के लिए घातक होगा। लोकतन्त्र की सुरक्षा के लिए प्रधानमन्त्री जी से निवेदन है कि इस विषय पर गम्भीरता से विचार करें और अपनी और देश की छवि धुमिल न होनें दें।

स्वतन्त्र विचारधारा

जिन धर्म को पाया है, पूर्व जन्म के नसीबों से,
समझा है धर्म का मर्म, कर्मों की लकीरों से ।।
अष्टकर्म के चक्र से, भव भव में भटकता आया।
फिर पुण्यकर्म से , निग्रन्थ धर्म है पाया ।।
मन की ग्रन्थियाँ टूटे, कि भव सागर से पार हो जावे ।
कर्म ऐसे करूँ कि अरिहन्त-भगवन्तों का दीदार हो जावे।।
न भटकू भंवर में , न अटकू जगत में।
स्वतन्त्र का आवगमन से कल्याण हो जावे।।

स्वतन्त्र जैन जालन्धर
86,करतार ऐवन्यु, हैबोवाल,लुधियाना।

स्वतन्त्र विचारधारा

इस समय जमाना गुजर रहा है, बड़े नाजूक दौर से।
सुख समृद्धि के लिए पढ़ना स्वतन्त्र विचारधारा गौर से।।

स्वतन्त्र जैन जालन्धर